पाठावली

हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा (200)

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

पाठावली

हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा (200)

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

प्रथम संस्करण : 2006

मूल्य : रुपए 60·00

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा–282005 द्वारा प्रकाशित और
मै. परीक्षा समिति प्रेस, आगरा–282005 से मुद्रित।

Pathwali (Hindi Bhasha Dakshta Diploma - 2DD

Book No. 34 (BVP)

प्रथम प्रारूप

संकल्पना एवं संयोजन
प्रो. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव
परामर्श
डॉ अरविन्द कुलश्रेष्ठ
अतिथि सहयोगी
प्रो. रामवीर सिंह
प्रो. चतुर्भुज सहाय
प्रो. रामलाल वर्मा

विभागीय सहयोगी
डॉ. देवेंद्र शुक्ल
डॉ. रमा सूद
डॉ. इंदिरा सिंह
डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी
डॉ. वीना माथुर
सुश्री पुष्पा बूलचंदानी

द्वितीय संशोधन

प्रो. वशिनी शर्मा	:	प्रो. रामवीर सिंह
डॉ. अरुण चतुर्वेदी	:	डॉ. मीरा सरीन
डॉ. सुशीला थामस	:	डॉ. पुष्पा बूलचंदानी
डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी	:	डॉ. वीना माथुर

तृतीय संशोधन

आगरा मुख्यालय		**दिल्ली केंद्र**
प्रो. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव	:	प्रो. श्रीश चंद्र जैसवाल
प्रो. अरुण चतुर्वेदी	:	डॉ. सुशीला थामस
प्रो. मीरा सरीन	:	डॉ. अपर्णा सारस्वत
डॉ. अल्पना शर्मा	:	डॉ. मंजू राय
		डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा
		डॉ. मनोरमा अग्रवाल

परामर्शदाता

प्रो. वी. रा. जगन्नाथन	प्रो. शंभुनाथ (निदेशक)
प्रो. चतुर्भुज सहाय	प्रो. रामवीर सिंह
प्रो. वशिनी शर्मा	डॉ. असगर वज़ाहत
डॉ. पुष्पा श्रीवास्तव	डॉ. अरुण कमल

आमुख

भारत सरकार द्वारा स्थापित केंद्रीय हिंदी संस्थान, द्वितीय और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास, शोध कार्य, अध्ययन-अध्यापन और प्रशिक्षण से संबंधित विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति में 1961 से संलग्न है। भारत के हिंदीतर प्रदेशों के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों से अनेक छात्र-छात्राएँ प्रतिवर्ष हिंदी-भाषा, साहित्य और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए यहाँ आते हैं।

प्रसन्नता का विषय है कि विदेशी छात्र-छात्राओं की पाठ्यपुस्तकें पहली बार प्रकाशित रूप में उन्हें उपलब्ध कराई जा रही हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में संकलित पाठों का चयन विदेशी छात्रों और उनसे संबंधित विभिन्न समस्याओं और वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह संकलन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होगा।

शंभुनाथ

(प्रो. शंभुनाथ)

निदेशक

भूमिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संचालित एक स्वायत्तशासी शैक्षिक संस्था है, जहाँ हिंदी के द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में अध्ययन-अध्यापन और प्रशिक्षण संबंधी कार्य संपादित किए जाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग केंद्रीय संस्थान का एक महत्वपूर्ण विभाग है जहाँ प्रतिवर्ष विश्व के कोने-कोने से छात्र-छात्राएँ हिंदी भाषा और साहित्य तथा भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने के लिए आते हैं। इन छात्रों के लिए पाँच स्तरों के क्रमिक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं-

1. हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण-पत्र (प्रथम स्तर - कक्षा 100)
2. हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा (द्वितीय स्तर - कक्षा 200)
3. हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा (तृतीय स्तर - कक्षा 300)
4. हिंदी भाषिक अनुप्रयोग डिप्लोमा (चतुर्थ स्तर - कक्षा 400)
5. हिंदी शोध डिप्लोमा (पंचम स्तर - कक्षा 500)

हिंदी साहित्य से परिचित कराने के लिए विभिन्न कक्षाओं के लिए चुनी हुई रचनाओं का संकलन तैयार किया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों के लिए पाठों का चयन करते समय निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखा गया है -

1. पाठों में भारतीय संस्कृति की सामासिकता और उसकी उज्ज्वल छवि प्रतिबिंबित हो।

2. पाठ विभिन्न युगों के साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हों।
3. पाठ विभिन्न प्रवृत्तियों के रचनाकारों का प्रतिनिधित्व करते हों।
4. पाठ विभिन्न विधाओं से संबंधित हों।
5. पाठ भाषा, विषय और अभिव्यक्ति की दृष्टि से विदेशी छात्रों लिए कठिन न हों।

सभी पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त की गई रचनाओं का उपयोग विशुद्ध रूप से शैक्षिक दृष्टि से किया जाता रहा है। इन पुस्तकों को अभी तक सभी कक्षाओं में टंकित रूप में प्रयुक्त किया जा रहा था तथा विभिन्न कारणों से इनके प्रकाशन की स्थिति नहीं बन पा रही थी। इस दृष्टि से प्रो. शंभुनाथ, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा साधुवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस कार्य को वरीयता दी। पाठ्यपुस्तकों के इन संशोधित संस्करणों के निर्माण में सहयोगी सभी महानुभावों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

– प्रो. अश्वनी कुमार श्रीवास्तव

विषय सूची

पाठ – 1

भारत

भारत एक विशाल देश है। यह एशिया में नीचे दक्षिण की ओर स्थित है। भारत के दक्षिण में नीचे हिंद महासागर है। इसके पूरब में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है। भारत को चार साधारण भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है। 1. उत्तर का पर्वतीय क्षेत्र जो बर्फ़ से ढका हुआ है। 2. दक्षिण का विशाल उपजाऊ मैदान। 3. पूर्व में असम के जंगलों का दलदल वाला क्षेत्र। 4. पश्चिम में रेगिस्तान का क्षेत्र।

भारत की राजधानी दिल्ली है। दिल्ली भी एक राज्य है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री यहीं से पूरे भारत का राज चलाते हैं। जिस प्रकार भारत की राजधानी दिल्ली है, उसी प्रकार प्रत्येक राज्य की अपनी एक-एक राजधानी है जहाँ से पूरे राज्य का प्रशासन चलाया जाता है। संघशासित प्रदेशों का प्रशासक राष्ट्रपति होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत एक बहुत बड़ा देश है। आइए देखें भारत की और क्या-क्या विशेषताएँ हैं।

भारत के उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत है जो हमारी पूर्वी सीमा तक फैला हुआ है। दक्षिण का क्षेत्र पठारी है। यहाँ ऊँचे-नीचे पठार और पथरीले इलाके हैं। कहीं-कहीं सतह चपटी है जहाँ पर यहाँ के वासी खेती करते हैं। पूर्वी निचले भाग में बंगाल की खाड़ी व हिंद महासागर है जहाँ से लगे मैदान तटीय हैं।

भारत में बहुत सी छोटी बड़ी नदियाँ बहती हैं। यहाँ पठार एवं हरे-भरे समतल मैदान हैं। देश के कुछ भाग हमेशा बर्फ़ से ढके रहकर बड़े मनोरम दिखाई देते हैं। यहाँ पर बहुत सर्दी पड़ती है। दक्षिणी भाग की जलवायु हमेशा सामान्य रहती है। यहाँ वर्षा भी सामान्य रूप से होती है। यहाँ प्रत्येक प्रकार के पेड़-पौधे लगाए जाते हैं और उन्नत खेती होती है। पश्चिमी भाग में कहीं-कहीं रेगिस्तान है जहाँ पर पानी का अभाव रहता है तथा रेत ही रेत है।

भारत में बहुत सी भाषाएँ बोलने वाले लोग और बहुत से धर्मों को मानने वाले लोग

रहते हैं, परंतु उनमें आपस में भाई–चारे सा व्यवहार है। प्रत्येक समुदाय के अपने–अपने लोकनृत्य तथा लोकगीत होते हैं। सभी समुदायों के लोगों के खान–पान तथा पहनावे में भी अंतर होता है। भारत एक विकासशील देश है। यहाँ पर हज़ारों कल–कारखाने हैं। यहाँ पर बहुत अधिक संख्या में यातायात के आधुनिक साधन तथा व्यवसाय हैं। समस्त संसार से भारत का व्यवहार मित्रवत् है। भारतीय मिल–जुल कर रहते हैं और सबको आदर देते हैं। यह देश शांतिप्रिय है तथा पड़ोसी देशों के साथ मिलकर शांति से रहने का प्रयास करता है।

शब्दार्थ

उपजाऊ	–	Fertile
विशाल	–	बड़ा
इलाका	–	क्षेत्र
तटीय	–	नदी या समुद्र के किनारे का
भाईचारा	–	आपसी मेल–जोल
यातायात	–	आने–जाने का साधन
व्यवसाय	–	व्यापार
पथरीले	–	पत्थरों के
समुदाय	–	समूह
संकल्प	–	प्रतिज्ञा, इरादा
रेगिस्तान	–	desert

प्रश्न :–

1. भारत एशिया में कहाँ स्थित है, एवं भारत को कितने भौगोलिक भागों में बाँटा जा सकता है?
2. भारत का राज कौन चलाता है?
3. संघशासित प्रदेशों का शासक कौन होता है?
4. भारत किस प्रकार का देश है?
5. भारत के विषय में आप क्या जानते हैं? निबंध लिखिए।

पाठ – 2

ताजमहल

विदेशी पर्यटकों के लिए भारत में पर्यटन का मुख्य आकर्षण है 'ताजमहल'। ताजमहल संसार के सबसे सुंदर भवनों में से एक है। संसार के इस महान आश्चर्य को मुग़ल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी बेग़म अर्जुमंद बानो की याद में बनवाया था। सन् 1662 में उसका विवाह शहज़ादा सलीम अर्थात् शाहजहाँ के साथ हुआ। ख़ुर्रम के पिता जहाँगीर ने बड़ी धूम-धाम के साथ यह विवाह करवाया। अर्जुमंद बानो की अनुपम सुंदरता के कारण उसको 'मुमताज़ महल' की उपाधि मिली। मुमताज़ महल और शाहजहाँ के बीच अत्यधिक प्रेम था। वह सुंदर तो थी ही, समझदार और बुद्धिमती भी थी। राजकाज के मामलों में वह शाहजहाँ का हाथ बँटाया करती थी।

अट्ठारह वर्षों के सुखमय वैवाहिक जीवन के बाद एक बार मुमताज़ बहुत बीमार पड़ी। इलाज़ के लिए शाहजहाँ ने राज्य के बड़े-से-बड़े वैद्यों और हकीमों को बुलवाया, किंतु उनके उपचार से उसे फ़ायदा नहीं हुआ और उसका स्वास्थ्य लगातार गिरता गया। मुमताज़ को अपनी मृत्यु का आभास होने लगा। उसने शाहजहाँ से पूछा, "मेरी मृत्यु के बाद आप मुझे भुला तो नहीं देंगे?" शाहजहाँ ने दुःखी मन से कहा, "मैं तुम्हें कैसे भुला सकता हूँ, तुम्हारी याद में मैं एक ऐसा मकबरा बनवाऊँगा, जो हमारे प्रेम को अमर बना देगा और जिसे देखकर सारी दुनिया तुम्हें अनंतकाल तक याद करती रहेगी।"

मुमताज़ की मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने एक मकबरे के लिए यमुना के किनारे पर स्थित जयपुर के राजा मानसिंह के उपवन को चुना। उसने वहाँ के पेड़ों को कटवाकर उपवन को साफ़ करवा दिया। मकबरे की रूपरेखा तैयार करवाने के लिए शाहजहाँ ने ईरान, इटली, फ़्रांस और फ़ारस आदि दूरवर्ती देशों से उत्तम कलाकारों को बुलवाया। सभी नक्शों में से उस्ताद ईसा इफ़दी का नक्शा शाहजहाँ को पसंद आया। अन्य कलाकरों से विचार-विमर्श करने के बाद उन्होंने योजना को अंतिम रूप दिया। इसके बाद ताजमहल का निर्माण प्रारंभ हुआ। शाहजहाँ

ने विभिन्न स्थलों से सामग्री मँगवाई–संगमरमर राजस्थान से, स्फटिक चीन से, मूल्यवान हीरे और पत्थर तिब्बत, लंका, बग़दाद आदि देशों से। मुख्य शिल्पकार ईसा इफ़दी की सहायता के लिए चित्रकार व जौहरी, भीतरी सजावट और गुंबद के लिए विशेषज्ञों को विभिन्न देशों से बुलवाया। 20,000 से अधिक मजदूरों ने मिलकर 12 वर्षों में मुख्य भवन तैयार कर लिया। साथ के अन्य भवनों को पूरा होने में दस वर्ष लग गए। ताजमहल के निर्माण में लगभग 5– 6 करोड़ रुपए लगे। इतने परिश्रम और लागत के बाद जब ताजमहल बनकर तैयार हुआ तो दुनिया उसे देखती रह गई।

पिछली चार शताब्दियों से ताजमहल शाहजहाँ और मुमताज़ के प्रेम का प्रतीक बनकर निश्चल खड़ा है। आज भी हम अपने विदेशी अतिथियों को बड़े गर्व के साथ इस स्मारक को दिखाने ले जाते हैं।

शब्दार्थ

पर्यटक	–	यात्री
पर्यटन	–	यात्रा
आकर्षण	–	खिंचाव
आश्चर्य	–	अचरज
अगाध	–	बहुत गहरा
अनुपम	–	अनोखा
उपाधि	–	पदवी
हाथ बँटाना	–	सहयोग देना
वैद्य, हकीम	–	डॉक्टर
उपचार	–	इलाज़
आभास	–	मालूम होना
अनंत काल	–	बहुत समय तक

विचार विमर्श	–	बातचीत
स्फटिक	–	सफ़ेद पारदर्शी पत्थर
लागत	–	कीमत
प्रतीक	–	चिह्न

प्रश्न :–

1. ताजमहल किसकी याद में बनवाया गया था?
2. मुमताज़ महल की उपाधि किसे मिली थी?
3. किसने किससे यह वाक्य कहे –

"मेरी मृत्यु के बाद आप मुझे भुला तो नहीं देंगे"?

"तुम्हारी याद में एक ऐसा मकबरा बनवाऊँगा, जो हमारे प्यार को अमर बना देगा"

4. ताजमहल का निर्माण किसने और क्यों करवाया था ?
5. शाहजहाँ ने मकबरे के लिए किस स्थान को चुना ?
6. मकबरे की रूपरेखा तैयार करवाने के लिए शाहजहाँ ने किन–किन देशों से कलाकारों को बुलवाया?
7. "ताजमहल शाहजहाँ और मुमताज़ के प्रेम का प्रतीक है" – इस विषय पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

पाठ – 3
गाँव हमारा

पर्वत पर है गाँव हमारा,
कितना सुंदर कितना प्यारा।
ऊँचे-ऊँचे शिखर तने हैं,
नीचे तरुवर खड़े घने हैं।
और नदी की चंचल धारा,
पर्वत पर है गाँव हमारा।

झर-झर, झर-झर झरने-झरते,
सुंदर हिरन कुलाँचें भरते।
दल के दल हैं बादल चलते,
जैसे चलता हो बनजारा।
पर्वत पर है गाँव हमारा।

उमड़-घुमड़ कर बादल आते,
दौड़-दौड़ घर में घुस जाते।
जैसे कोई नटखट बालक,
ऊधम करता, लगता प्यारा।
पर्वत पर है गाँव हमारा।

बाँस फूस का छोटा घर है,
नहीं किसी का भय या डर है।
दिन में सूरज धूप लुटाता,
फिर चंदा करता उजियारा।
पर्वत पर है गाँव हमारा।

शब्दार्थ

शिखर	–	पहाड़ की चोटी, (Peak)
तने	–	अकड़े हुए
तरुवर	–	वृक्ष, पेड़
चंचल	–	अस्थिर
कुलाँचें भरना	–	छलाँग लगाना
बनजारा	–	एक विशेष घुमंतू जाति, (जिप्सी)
नटखट	–	चंचल
ऊधम	–	शैतानी
उजियारा	–	प्रकाश

प्रश्न:–

1. बादल नटखट बालक जैसे क्यों लगते हैं ?
2. 'गाँव हमारा' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।
3. गाँव कहाँ पर स्थित है ?
4. गाँव की सुंदरता पर पाँच वाक्य लिखिए।

पाठ – 4

श्रवण कुमार

राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे। उनके राज्य में एक गरीब लड़का रहता था। उसका नाम श्रवण था। इसके माता–पिता अंधे थे। श्रवण अपने माँ–बाप की बड़ी सेवा करता था। उन्हें कपड़े पहनाता, नहलाता और रोटी बनाकर खिलाता था। हर घड़ी उनकी सेवा में लगा रहता था। जब वे तीर्थ–यात्रा करना चाहते, तब उन्हें काँवर में बैठाकर यात्रा कराने ले जाता।

एक रात को श्रवण अपने माँ–बाप को तीर्थ यात्रा कराने ले जा रहा था। रास्ते में उन्हें बड़ी प्यास लगी। पास में कहीं पानी न था। श्रवण घड़ा लेकर नदी से पानी भरने लगा। अँधेरा काफ़ी था। इस समय राजा दशरथ भी उसी जंगल में शिकार खेल रहे थे। राजा बाण चलाने में बहुत चतुर थे। वे आवाज़ को सुनकर निशाना लगा सकते थे। निशाना ऐसा लगता था कि जहाँ से आवाज़ आती, तीर ठीक वहीं जा लगता था। इसमें कभी गलती नहीं होती थी।

जिस समय श्रवण नदी से पानी भर रहा था, उस समय घड़े के पानी में डूबने से आवाज़ हुई। राजा ने समझा कि कोई जंगली हाथी पानी पी रहा है। उन्होंने उस आवाज़ को निशाना बनाकर एक तीर छोड़ दिया। तीर श्रवण की छाती में जा लगा।

राजा दशरथ अब उस जगह पर गए। उन्होंने देखा कि उनके तीर से एक लड़का घायल हो गया है। श्रवण के गहरी चोट लगी थी। वह कराह रहा था। यह देखकर राजा को बड़ा दुःख हुआ। राजा ने अपने हाथ से श्रवण के शरीर से तीर निकाला। उसे बहुत समझाया। पर अब क्या हो सकता था।

श्रवण ने राजा से कहा– "पास ही मेरे माँ–बाप हैं। वे अंधे हैं। उन्हें प्यास लग रही है। तुम उन्हें पानी दे आओ।"

इतनी बात करने के बाद श्रवण के प्राण छूट गए। राजा ने उसके शरीर को अपने कंधे पर रखा। वे अँधेरे में ढूँढ़ते–ढूढ़ते श्रवण के माँ–बाप के पास पहुँचे और उन्होंने श्रवण के

अंधे माँ–बाप को सारा हाल सुनाया। यह सुनते ही दोनों फूट–फूटकर रोने लगे। उन्होंने राजा दशरथ को गालियाँ भी दीं। बेटे की मृत्यु से उन्हें इतना दुःख हुआ कि कुछ ही घंटों में वे मर गए। मरते समय उन्होंने राजा को शाप दिया। उन्होंने कहा– "जिस प्रकार हम अपने पुत्र के दुःख में मर रहे हैं, उसी प्रकार तुम भी मरोगे।"

राजा दशरथ ने क्षमा माँगी और कहा– "मुझसे यह अपराध अनजाने में हो गया है।" परंतु अब क्या हो सकता था। राजा ने तीनों की दाह–क्रिया की और वे अयोध्या वापस लौट आए। उन्होंने यह कथा ऋषि वामदेव को सुनाई थी।

इस शाप के कारण राजा दशरथ भी अपने पुत्रों के विछोह के दुःख में मरे थे।

शब्दार्थ

घड़ा	–	पानी रखने का मिट्टी का बर्तन
कराह	–	दर्द भरी आवाज़
श्राप	–	बद्दुआ
बिछोह	–	एक दूसरे से अलग होना

प्रश्न :–

1. राजा दशरथ कहाँ के राजा थे?
2. श्रवण अपने माता–पिता को कहाँ ले जा रहा था ?
3. श्रवण अपने माता–पिता को किसमें बिठाकर ले जा रहा था ?
4. राजा दशरथ ने तीर क्यों चलाया ?
5. राजा दशरथ दुःखी क्यों हुए ?
6. श्रवण ने राजा दशरथ से क्या कहा ?
7. श्रवण के माता – पिता ने राजा दशरथ को क्या श्राप दिया ?

पाठ – 5

गांधी जी

2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर में गांधी जी का जन्म हुआ। उनके पिता करमचंद गांधी राजकोट राज्य के दीवान थे। इनकी माता पुतलीबाई बालक मोहनदास को सच्चाई और ईमानदारी की भाँति–भाँति की कहानियाँ सुनाया करती थीं। बालक इन कथाओं को बड़े चाव से सुनता था।

बालक मोहनदास ने विद्‌यार्थी–काल में 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नाटक देखा था। इस नाटक का उस पर बड़ा असर हुआ। उन्हीं दिनों मोहन ने एक चित्र देखा जिसमें श्रवण कुमार अपने माता–पिता को काँवर पर बिठाकर लिए जा रहा था। श्रवण कुमार का नाटक वह पहले पढ़ चुका था। बालक मोहनदास ने श्रवण कुमार की ही तरह अपने माता–पिता की सेवा करने की सोची।

स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर लेने के बाद गांधी जी इंग्लैंड गए। वहाँ जाने से पूर्व ही उनका विवाह कस्तूरबा के साथ हो गया था। वहाँ से वे बैरिस्टर बनकर भारत वापस आए और वकालत करने लगे। अपने एक मित्र के बुलाने पर गांधी जी एक मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ़्रीका गए। उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ भारतीयों और अफ़्रीका निवासियों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं। उन्हें यह बुरा लगा और उन्होंने इसका विरोध किया। इस कार्य के लिए वे अफ़्रीका में ही रुक गए।

गांधी जी ने एक निराले ढंग से लड़ाई की। वे बंदूक या तलवार से नहीं लड़े। उनका सिद्‌धांत था कि किसी को चोट पहुँचाकर काम पूरा करना ठीक नहीं। जिस काम को गलत समझो, उसे मत करो। इस कारण यदि सज़ा मिले तो उसे खुशी से सहो। इससे सज़ा देने वाले का मन बदल जाएगा। इस प्रकार सत्य के लिए किसी को चोट पहुँचाए बिना लड़ने को गांधी जी सत्याग्रह कहते थे। इस प्रकार उन्होंने दक्षिण अफ़्रीकावासियों की हिम्मत बँधाई। उनकी कुछ कठिनाइयाँ दूर हुईं। संसार ने युद्‌ध करने का एक नया ढंग देखा। बीस वर्षों तक गांधी जी वहाँ

काम करने के बाद भारत वापस आ गए। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए सत्याग्रह शुरू कर दिया।

देश गांधी जी के साथ हो लिया। हजारों युवकों ने स्कूल, कॉलेज छोड़ दिए। वकीलों ने वकालत छोड़ दी। सैकड़ों लोगों ने सरकारी नौकरियाँ छोड़ दीं। नारियाँ भी घरों से बाहर आ गईं। गांधी जी ऐसे नेता बन गए जिसके पीछे समस्त भारत चलने लगा।

गांधी जी ने देश की आजादी के लिए बार-बार सरकार का विरोध किया और कई बार अपने साथियों के साथ जेल गए। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार किया। सरकार के गलत कानूनों को तोड़ा। जेल गए। डाँडी नामक स्थान पर नमक का कानून तोड़कर समुद्र तट पर नमक बनाया। यह दाँडी यात्रा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी। गांधी जी ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया। अंग्रेज़ों को भली प्रकार समझ में आ गया कि अब भारत को गुलाम नहीं रखा जा सकता। 15 अगस्त, 1947 को हमने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने के साथ ही गांधी जी ने लोक कल्याण के कई काम किए, जैसे छुआछूत को दूर करना, स्त्रियों को समान अधिकार दिलवाना, ग्राम सुधार का प्रयास करना, बेसिक शिक्षा की योजना बनाना और सब धर्मों को बराबर आदर की दृष्टि से देखना आदि।

गांधी जी की सबसे प्रिय धुन रामधुन थी।

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

गांधी जी की दृष्टि से प्रार्थना बहुत ही महत्वपूर्ण थी। वे प्रार्थना सभा में लोगों को उपदेश दिया करते थे। इन प्रार्थना सभाओं में रामधुन भी गाई जाती थी। 30 जनवरी, 1948 को शाम की प्रार्थना-सभा में एक नासमझ व्यक्ति ने गांधी जी पर गोलियाँ चला दीं। 'हे राम' कहते हुए महात्मा गांधी ने प्राण त्याग दिए। उनका अंतिम संस्कार दिल्ली में यमुना किनारे हुआ। उस स्थान को आज राजघाट के नाम से जाना जाता है। लाखों रोते-बिलखते लोगों ने उनको अंतिम विदाई दी। कृतज्ञ देश ने उन्हें राष्ट्रपिता माना।

शब्दार्थ

चाव	–	इच्छा, रुचि
विरोध	–	इंकार, oppose
सिद्धांत	–	नियम
सत्याग्रह	–	सच्चाई के लिए लड़ना
दाँडी यात्रा	–	नमक आंदोलन के लिए की गई यात्रा
नेतृत्व	–	दिशा प्रदान करना
कृतज्ञ	–	आभारी

प्रश्न :–

1. गांधी जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ? उनके माता–पिता का क्या नाम था ?
2. गांधी जी ने बचपन में कौन सा नाटक देखा था ? और नाटक का उन पर क्या प्रभाव पड़ा ?
3. गांधी जी दक्षिण अफ्रीका क्यों गए ?
4. गांधी जी का सिद्धांत क्या था ?
5. 'सत्याग्रह' का क्या अर्थ था ?
6. गांधी जी ने देश की स्वतंत्रता के लिए क्या किया ?
7. गांधी जी ने लोक कल्याण के कौन –कौन से कार्य किए ?
8. गांधी जी की प्रिय धुन क्या थी ?
9. कृतज्ञ देश ने गांधी जी को राष्ट्रपिता क्यों माना ?

पाठ – 6

राष्ट्रीय पुष्प : कमल

मानव स्वभाव से ही सौंदर्य–प्रेमी है और सौंदर्य के साधनों में पुष्पों का विशेष स्थान है। सभ्यता के इस विकसित युग में सारी दुनिया में तरह–तरह के पुष्प पाए जाते हैं। प्राचीनकाल से ही कमल हमारे देश का प्रिय पुष्प है और अब यह भारत का राष्ट्रीय पुष्प है। जहाँ–जहाँ भारतीय सभ्यता गई, उन सभी स्थानों पर अन्य प्रतीकों के साथ कमल का प्रतीक भी गया। यह मुख्य रूप से जलाशय में ही उत्पन्न होता है और पत्ते लगभग गोल, ढाल जैसे होते हैं। इनकी कुछ जातियों में बिल्कुल ही सुगंध नहीं होती है। पतों की लंबी डंठलों से एक प्रकार का रेशा निकाला जाता है और इससे मंदिरों के दीपों की बत्तियाँ बनाई जाती हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस रेशे से तैयार कपड़ों के पहनने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं। कमल के तने सीधे, खोखले और लंबे होते हैं। ये तने पानी के नीचे कीचड़ में चारों तरफ़ फैलते जाते हैं।

कमल के लगभग 8 वंश और 100 जातियाँ हैं। संकृत में कमल के नाम हैं– पद्म, पंकज, सरोज, सरसिज, सरोरुह, सरसीरुह, जलज, जलजात, नीरज, वारिज, अंभोरुह, अंबुज, अंभोज, अब्ज, अरविंद, नलिन, उत्पल, पुंडरीक, कुवलय, तामरस, इंदीवर, वनज, पंकरुह आदि। फ़ारसी में कमल को नीलोफ़र कहते हैं और अंग्रेज़ी में इंडियन लोटस या स्वेड लोटस, चाइनीज़ वाटर-लिली, ईजिप्शियन या पाइथागोरियन वीन। वनस्पति विज्ञान में इसका लैटिन नाम नीलंबियन न्यूसिफ़ेरा है।

इस सुंदर फूल के प्रत्येक भाग का अलग–अलग नाम है। इसका पौधा चिकित्सा के उपयोग में भी आता है। कई प्रकार की आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक और यूनानी दवाइयाँ कमल के भिन्न–भिन्न भागों से तैयार की जाती हैं। दवा के रूप में कमल का उपयोग चीन और मलाया के निवासी खूब करते हैं। इनके तने की सब्ज़ी भी बनती है और काफ़ी स्वादिष्ट होती है।

कमल की लंबी डंडी को, जिस पर पत्तियाँ या फूल लगते हैं मृणाल या कमल नाल कहते हैं। यह काफ़ी लंबी और खोखली होती है। कमल का फूल खिलने पर तो बहुत सुंदर लगता है; किंतु बंद रहने पर भी यह काफी मोहक लगता है। अरघे के आकार की बड़ी-बड़ी पंखुरियाँ एक-दूसरे पर चढ़ी रहती हैं, जिसके भीतर एक पीले रंग का झुमका-सा कमल-नाल से लगा रहता है। इस झुमके के चारों ओर पतले-पतले डोरे झालरनुमा लगे रहते हैं, जो कमल के जीर कहलाते हैं। झुमके के भीतर लंबे-लंबे बीज रहते हैं, जिन्हें कमल-गट्टा कहते हैं। यही झुमका पकने पर तालमखाना कहलाता है। कमल के पत्ते को पुरइन कहते हैं। ये हाथ-हाथ भर के गोल और चिकने पत्ते होते हैं। इन पर पानी भी नहीं ठहरता।

इसके अलावा कमल के फूलों का उपयोग पूजा-पाठ और शृंगार में भी होता है। इसके पत्तों का इस्तेमाल पत्तल के रूप में भी किया जाता है फिर बीजों का उपयोग कई प्रकार की दवाइयों में होता है और उन्हें भूनकर मखाने बनाए जाते हैं, जो खाने के काम में आते हैं।

साहित्य में कमल का वर्णन बहुत सुंदर ढंग से अनेक स्थलों पर और अनेक विधाओं में हुआ है। सुंदरता का बखान करने में कमल का उपयोग उपमा देने के लिए किया जाता है। सुंदर मुख की, हाथों की और पैरों की लाल कमल के फूल से तथा आँख की उपमा नील-कमल दल से दी जाती है।

कमल सूर्योदय होने पर खिलता है और सूर्यास्त होने पर बंद हो जाता है, ऐसा कवियों का विश्वास है। हंस और हाथी कमल के तने को बड़े चाव से खाते हैं। साहित्य में ऐसा उल्लेख मिला है कि कमल के पत्ते के बने पंखे विरहिणी स्त्रियों को दारुण दुःख में शांति प्रदान करते हैं।

भारतीय पौराणिक आख्यानों में कमल का प्रमुख स्थान है। हमारे पुराने चित्रों, मूर्तियों और भित्तिचित्रों में इसकी भरमार है। पुराणों में ब्रह्मा को विष्णु की नाभि से निकले हुए कमल से उत्पन्न बताया गया है और इसीलिए लक्ष्मी को पद्मा, कमला और कमलासना कहा गया है। विष्णु भगवान को चार अलग-अलग हाथों में शंख, चक्र, गदा और कमल धारण किए हुए दिखलाया गया है। अनेक देव मंदिरों में कमल के चित्र या संकेत देखने को अकसर मिल जाते हैं। भगवान् बुद्ध की जितनी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, अधिकतर उनमें कमल पर आसीन दिखाया गया है। मिस्र देश की पुस्तकों और मंदिरों की चित्रकारी में भी कमल का प्रमुख स्थान है। कुछेक विद्वानों के अनुसार कमल मिस्र देश से ही भारत आया है।

भारत में तरह-तरह के फूल पाए जाते हैं किंतु कमल के फूल का एक अलग मोहक रूप है।

प्रश्न:–

1. भारत का राष्ट्रीय पुष्प क्या है?
2. यह कहाँ उत्पन्न होता है?
3. कमल के फूल किस–किस रंग में पाए जाते हैं?
4. इनके पत्तों की लंबी डंठलों से निकले रेशों से क्या–क्या बनाया जाता है?
5. कमल के संस्कृत पर्याय बताइए?
6. अन्य देशों में कमल के क्या–क्या नाम हैं?
7. कमल का उपयोग किन–किन रूपों में किया जाता है?
8. मृणाल या कमल नाल किसे कहते हैं? उसका विस्तृत वर्णन कीजिए?
9. साहित्य में कमल का वर्णन कैसे किया गया है?
10. कमल कब खिलता है और कब बंद हो जाता है?

पाठ – 7
मेरा बचपन

–सुभद्रा कुमारी चौहान

बार-बार आती है मुझको
मधुर याद बपचन तेरी।
गया, ले गया तू जीवन की
सबसे मस्त खुशी मेरी।

चिंता-रहित खेलना खाना,
वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द
कैसे भूला जा सकता है।
बपचन का अतुलित आनंद!

किए दूध के कुल्ले मैंने
चूस अंगूठा सुधा पिया।
किलकारी कल्लोल मचाकर
सूना घर, आबाद किया।

रोना और मचल जाना भी
क्या आनंद दिखाते थे।

बड़े-बड़े मोती-से आँसू
जयमाला पहनाते थे।

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आई, मुझको उठा लिया।
झाड़-पोंछकर चूम-चूम
गीले गालों को सुखा दिया।

मैं बचपन को बुला रही थी।
बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी
यह छोटी सी कुटिया मेरी

'माँ ओ' कहकर बुला रही थी,
मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने आई थी।

मैंने पूछा, 'यह क्या लाई ?'
बोल उठी वह, 'माँ, काओ।'
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से
मैंने कहा- 'तुम्हीं खाओ।'

पाया मैंने बचपन फिर से,
बचपन बेटी बन आया,
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझमें नवजीवन आया

मैं भी उसके साथ खेलती
खाती हूँ तुतलाती हूँ।
मिल कर उसके साथ स्वयं
मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।

जिसे खोजती थी बरसों से
अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर
वह बचपन फिर से आया।

शब्दार्थ

मस्त	–	प्रसन्न, खुश
चिंतारहित	–	बिना परेशानी या फ़िक्र के
निर्भय	–	बिना डर के
स्वच्छंद	–	आज़ाद
अतुलित	–	जिसकी बराबरी न की जा सके
सुधा	–	अमृत
कल्लोल	–	शोर
आबाद करना	–	बसाना
प्रफुल्लित	–	ख़ुश
मंजुल	–	सुंदर

प्रश्न:–

1. कवयित्री को अपने मधुर बचपन की याद क्यों आती हैं?
2. बचपन में किस बात का ज्ञान नहीं रहता ?
3. बच्चे के रोने पर माँ क्या करती है?
4. बचपन का आनंद क्यों नहीं भुलाया जा सकता ?
5. कवयित्री अपने बचपन को वापस कब पाती है ?
6. प्रस्तुत कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ – 8
सच्चा मित्र

एक जंगल में बरगद के पेड़ के पास एक कौआ और एक हिरन रहते थे। दोनों में बहुत मित्रता थी। दिनभर दोनों जंगल में घूमकर अपना पेट भरते थे। शाम होने पर साथ–साथ लौटते थे। रात को दोनों आपस में सुख–दुख की बातें करते थे।

बरगद के पेड़ से कुछ दूर एक सियार रहता था। वह बहुत दुष्ट और चालाक था, इसलिए उसका कोई मित्र नहीं था। उसे हिरन और कौए की मित्रता अच्छी नहीं लगती थी। सियार हिरन का माँस खाना चाहता था इसलिए उसने हिरन को अपना मित्र बना लिया। परंतु कौए ने हिरन से कहा कि सियार कपटी है। तुम यहाँ से दूर चले जाओ या इससे मित्रता न करो। हिरन ने कौए की बात नहीं मानी।

एक दिन सियार ने हिरन से कहा– मित्र मेरे साथ चलो। मैंने धान का पका हुआ एक खेत देखा है। आज तुम वहाँ खूब धान खाना। हिरन ने सियार की बात मान ली। वह धान के खेत में चरने लगा। खेत में किसान ने जाल फैला दिया था। हिरन जाल में फँस गया और मदद के लिए सियार को पुकारने लगा। हिरन ने सियार से कहा– मित्र मुझे इस जाल से बाहर निकालो। सियार ने कहा– मित्र, आज मेरा उपवास है। मैं चमड़े को अपने दाँत से नहीं काटूँगा। फिर सियार थोड़ी दूर जाकर छिप गया। वह सोचने लगा कि कल खेत वाला आएगा। हिरन को मारकर माँस ले जाएगा। मुझे उसकी हड्डियाँ तो खाने को मिल ही जाएँगी।

शाम को कौआ बरगद के पेड़ पर लौटा। उसने हिरन को नहीं देखा। वह समझ गया कि सियार ने मेरे मित्र को अवश्य धोखा दिया है। वह हिरन को ढूँढ़ने निकला। धान के खेत में उसे हिरन मिल गया। कौए को देखकर हिरन रोने लगा। उसने कौए को सारी बात बताई। कौए ने कहा–चिंता मत करो। मैं तुम्हें जाल से छुड़ाऊँगा। तुम किसान को देखकर साँस रोक लेना जब मैं काँव–काँव करूँ तब तुम उठकर भाग जाना।

सुबह होने पर किसान आया। वह जाल में मरा हुआ हिरन देखकर बहुत खुश हुआ। उसने जाल खोल दिया। कौआ काँव-काँव करने लगा। कौए की आवाज़ सुनकर हिरन भाग गया। किसान ने हिरन को मारने के लिए ज़ोर से डंडा फेंका जो कपटी सियार के सिर में लगा। सियार वहीं मर गया।

अच्छे मित्र सदैव मुसीबत से बचाते हैं और कपटी मित्रों का बुरा अंत होता है।

शब्दार्थ

बरगद	–	एक प्रकार का पेड़
दुष्ट	–	खराब व्यक्ति
चालाक	–	चतुर
उपवास	–	व्रत

प्रश्न :–

1. सियार का कोई मित्र क्यों नहीं था?
2. सियार ने हिरन को अपना मित्र क्यों बनाया?
3. कौए ने हिरन से क्या कहा?
4. सियार हिरन को कहाँ और क्यों ले गया?
5. हिरन जाल में कैसे फँस गया?
6. कौए ने किस प्रकार हिरन की सहायता की?
7. सियार का अंत किस प्रकार हुआ?
8. 'कपटी मित्रों का बुरा अंत होता है'– स्पष्ट कीजिए।

पाठ – 9

भारतीय संयुक्त परिवार

मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है। यही कारण है कि उसमें एक साथ रहने की प्रवृत्ति पाई जाती है। मनुष्य ने अपने रहने के लिए कई प्रकार की व्यवस्थाएँ बनाई हैं, जिनमें से संयुक्त परिवार व्यवस्था एक सामाजिक संस्था है।

भारत में प्राचीनकाल से संयुक्त परिवार अधिक संख्या में पाए जाते थे। इसका उदाहरण हमें भारत के बहुत से भागों में मिलता है। इस व्यवस्था में दादा–दादी से लेकर पौत्र–पौत्री तक तीन पीढ़ियाँ एक ही घर में रहती हैं।

संयुक्त परिवार एक ऐसा केंद्र है जहाँ बच्चे एक वातावरण में पलते हैं। वहाँ उनको उदारता और आत्म त्याग की शिक्षा मिलती है। बड़े होकर परिवार की ज़िम्मेदारी सँभालने में ये बातें काफ़ी सहायक होती हैं। उसका हर एक सदस्य परिवार का एक उपयोगी सदस्य माना जाता है। वह परिवार के दु:ख व सुख का भागी होता है, कठिनाई और बेरोज़गार में उसे परिवार से मदद और आशा मिलती है। रोग, आर्थिक कठिनाई, दुर्भाग्य से घिरे होने पर भी परिवार में उसे सुरक्षा मिलती है, जिससे कष्टों को सहन करने की शक्ति मिलती है।

लेकिन अब भारतवर्ष की संयुक्त परिवार व्यवस्था में परिवर्तन आता जा रहा है। इसका मुख्य कारण आर्थिक है। अंग्रेज़ों के राज से पूर्व भारत के लोगों का मुख्य पेशा खेती–बारी था। उस समय के उद्योग वे थे, जिन्हें आज लघु उद्योग या कुटीर उद्योग कहा जाता है।

तकनीकी प्रगति, बड़े उद्योगों के विकास, लंबी यात्रा की सुविधाएँ, खेती–बारी में परिर्वतन और कई दूसरे कारणों से परिवर्तन की गति दिन–प्रतिदिन तेज़ होती जा रही है। जीवन के हर एक क्षेत्र में आधुनिकता व रूढ़िवाद का संघर्ष चल रहा है और अब एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का विकास हो रहा है जो हमारे प्राचीन जीवन से बिल्कुल ही अलग है।

परिवार के बुजुर्ग लोग अब भी गाँव में रहना पसंद करते हैं। इसके दो कारण हैं एक तो उन्हें अपनी ज़मीन से मोह होता है और दूसरे परिवार की आमदनी इतनी कम होती है कि बिना खेती-बारी किए ख़र्च चलाना बहुत मुश्किल होता है। यदि वे शहर में आकर रहना चाहते हैं तो छोटे मकानों और बढ़ती हुई महँगाई के कारण वे वहाँ रह नहीं पाते और इस तरह संयुक्त परिवार एक साथ नहीं रह सकते। इसके अलावा परिवार के नवयुवक अपने काम के कारण अलग-अलग मुहल्लों व नगरों में अपने निवास स्थान बना लेते हैं। अब बड़े नगरों में अधिक संख्या ऐसे परिवारों की है, जिसमें केवल पति-पत्नी व उनकी अविवाहित संतान ही साथ रहते हैं। ऐसा लगता है कि संयुक्त परिवार व्यवस्था कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाएगी।

शब्दार्थ

प्रवृत्ति	–	आदत
परोपकार	–	दूसरों की भलाई
कुटीर उद्योग	–	लघु-उद्योग, स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज़
बुज़ुर्ग	–	बड़ा-बूढ़ा
मोह	–	लगाव
आमदनी	–	आय, Income
ख़र्च	–	व्यय करना
नगरों	–	शहरों
निवास स्थान	–	रहने का स्थान
अविवाहित	–	जिसकी शादी नहीं हुई हो
संतान	–	औलाद
भूतकाल	–	बीता हुआ समय

प्रश्न :–

1. भारतीय संयुक्त परिवार का क्या अर्थ है?
2. संयुक्त परिवार के क्या लाभ हैं?
3. संयुक्त परिवार में परिवर्तन के क्या कारण हैं?
4. बुज़ुर्गों के गाँव में रहने का क्या कारण है?
5. संयुक्त परिवार व्यवस्था आपको पसंद है अथवा नहीं अपने विचार लिखिए।
6. अंग्रेज़ी राज से पूर्व भारत के लोगों का मुख्य पेशा क्या था?
7. कौन सी तीन पीढ़ियाँ मिलकर एक संयुक्त परिवार बनाती हैं

पाठ – 10

हम भी तो कुछ देना सीखें

– गोपाल कृष्ण कौल

प्रकृति हमें देती है सबकुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।

सूरज हमें रोशनी देता
हवा नया जीवन देती है;
भूख मिटाने को हम सबकी
धरती पर खेती होती है।

औरों का भी हित हो जिसमें,
हम कुछ ऐसा करना सीखें।
हम भी तो कुछ देना सीखें॥

पथिकों को जलती दुपहर में
पेड़ सदा देते हैं छाया;
ख़ुशबू खिले फूल की देते
देते मधुर फलों की माया।

त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम भी तो कुछ जीना सीखें।
हम भी तो कुछ देना सीखें॥

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएँ
जो चुप हैं उनको वाणी दें;
जो पिछड़े हैं उन्हें बढ़ाएँ
प्यासी मिट्टी को पानी दें।

हम मेहनत के दीप जलाकर,
नया उजाला करना सीखें।
हम भी तो कुछ देना सीखें॥

शब्दार्थ

रोशनी	–	प्रकाश
हित	–	उपकार, भला
खेती	–	कृषि
पथिक	–	राहगीर
ख़ुशबू	–	सुगंध
मधुर	–	मीठा
तरु	–	पेड़
अनपढ़	–	जो पढ़ा लिखा न हो

वाणी	–	बोली
मेहनत	–	परिश्रम
दीप	–	दीपक

प्रश्न :–

1. प्रकृति हमें क्या–क्या देती है?
2. त्यागी तरुओं के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
3. 'देना सीखें' कविता का सार लिखिए।
4. हम नया उजाला कैसे कर सकते हैं?
5. 'देना सीखें' कविता के कवि का नाम लिखिए।

पाठ – 11

एक कौआ सीज़र

लेखक –रस्किन बांड
अनुवादक – ब्रह्मदेव

एक दिन मैं लौट रहा था तो देखा–रास्ते में ही एक नन्हा–सा कौआ पड़ा हुआ है। यह ऊपर अपने घोंसले से गिर गया होगा। यहाँ यह ताँगा अथवा बैलगाड़ी के पहिए के नीचे आकर कुचल जाएगा या कोई बिल्ली ही उठा ले जाएगी, यह सोचकर मैं घर ले आया। इसकी दशा काफ़ी चिंताजनक थी। मुँह खुला हुआ और सिर एक ओर लटका हुआ था। मुझे आशा नहीं थी कि यह बच पाएगा। लेकिन मेरे दादा जी की मेहनत से बच गया। मैंने पेंसिल से इसकी चोंच खोली और दादी जी ने दूध में रोटी मिलाकर इसके मुँह में डाली।

बीच–बीच में हमने ब्रांडी की कुछ बूँदें भी दीं। इतनी मेहनत के बाद वह सुधरने लगा। जब कुछ ठीक हो गया तो हमने इसे छोड़ दिया। परंतु वह उड़कर बाहर नहीं गया। स्वयं को हमारे घर का सदस्य ही समझने लग गया। हमें पता नहीं चला कि वह नर है या मादा, लेकिन हमने इसका नामकरण 'सीज़र' कर दिया।

धीरे–धीरे हमारे साथ भोजन करने लग गया। वह बगीचे में कुछ न कुछ खा ही लेता। रोटी की मेज़ पर वह चैन ही न लेने देता जब तक हम उसे सूप और सब्ज़ी न दे देते। उसकी शैतानियों के मारे तो दादी जी की नाक में दम रहता। कभी वह माचिस की डिबिया खाली कर देता, कभी चोंच मार–मारकर समाचार–पत्र की धज्जियाँ उड़ा देता, फूलदान उलट देता या हमारे कुत्ते की पूँछ पर चोंच मार उसे तंग करता।

दादी जी अक्सर कहतीं, "यह कौआ हमारा सत्यानाश कर देगा। तुम लोग इसे पिंजरे में बंद क्यों नहीं कर देते?"

हमने सीज़र को पिंजरे में बंद करने का प्रयत्न भी किया, लेकिन इसने उसके अंदर जाने पर इतना शोर किया, पंख फड़फड़ाए कि चैन पाने के लिए हमें उसे छोड़ देना पड़ा। दूसरे कई कौए हमारे घर–आँगन में आते–जाते रहते थे, लेकिन सीज़र कभी उनके साथ नहीं गया। जाना तो अलग, वह उनसे अलग ही रहता, उनकी ओर उपेक्षा से देखता मानो वे किसी भिन्न जाति के हों। मेरे दादा जी कहते, "संभव है यह जंगली कौआ हो जो शहरी कौओं से नहीं मिलते।"

हमारे साथ रहने के कारण वह स्वयं को उनसे श्रेष्ठ मानने लगा था। वह अक्सर हमारे तोते से भी लड़ता–झगड़ता। उसके पिंजरे के ऊपर बैठकर अपनी चोंच से उसे चिढ़ाता। पिंजरे के अंदर से तोता उसे पकड़ने की कोशिश करता। दोनों का यह खेल बड़ा रोचक रहता।

सीज़र धीरे–धीरे कुछ बोलना भी सीख गया, या समझें कि हम उसकी बातें समझने लग गए। खिड़की पर बैठकर वह 'हैलो, हैलो' करता रहता। मैंने उसे अपनी बाँह पर बैठाकर एक शब्द और सिखाया 'किस–किस'। यह शब्द कहते हुए वह अपना मुँह मेरे मुँह के पास रखता।

एक बार संतोष मौसी आईं तो सीज़र उड़कर उनकी बाँह पर बैठकर 'किस–किस' करने लग गया। तो संतोष मौसी को बड़ा अच्छा लगा। लेकिन तभी सीज़र की दृष्टि शायद मौसी जी के चश्मे की ओर मुड गई। उसने चोंच मारकर उनका चश्मा नीचे गिरा दिया। पता नहीं क्यों, हमारे पालतू जानवर हमारी संतोष मौसी को कभी माफ़िक नहीं आए।

दादी जी हम हमेशा सीज़र पर बौखलाती रहतीं। अगर वह अपनी शैतानियाँ घर की चारदीवारी तक ही सीमित रखता तब भी ठीक था,लेकिन उसने आस–पड़ोस के घरों में भी आरंभ कर दिया। आसपास के घरों से अक्सर पेन, पेंसिल, बालों के पिन, रिबन, चाबियाँ, शटलकॉक, दाँत के ब्रश और नकली दाँत गायब होने लगे। सीज़र को दाँतों के ब्रश से विशेष लगाव था। उसने मेरे कमरे की आलमारी के ऊपर इनका ढेर एकत्र कर लिया। प्रायः हमारे हर पड़ोसी का प्रतिनिधि हमारे यहाँ उस ब्रश के रूप में उपस्थित था। उस वर्ष दाँतों के ब्रशों की बिक्री अवश्य बढ़ी होगी। हमारी दादी जी का ब्लडप्रेशर भी बढ़ गया था।

सीज़र पड़ोस के ऐसे बच्चों की खोज–ख़बर रखता जो पास की बनिए की दुकान से मिठाई ख़रीदने जाते थे। उनके हाथों से मिठाई लेकर उड़ जाने में सीज़र को विशेष आनंद

आता। धोकर सुखाने के लिए फैलाए कपड़ों पर लगे क्लिप भी उसे बहुत पसंद थे। पड़ोसी बाज़ार से लौटकर देखते तो उनके गीले कपड़े मिट्टी पर नीचे गिरे होते क्योंकि इस बीच में सारे क्लिप सीज़र गायब कर देता। ये क्लिप भी मेरी आलमारी पर जमा होते रहते।

लोगों के आँगन में लगी सब्ज़ियाँ चुराने के कारण ही उसे एक बार किसी ने खींचकर एक लाठी मारी। इससे इसकी टाँग टूट गई। मैंने और दादा जी ने उसकी मरहम-पट्टी की, लेकिन टाँग ठीक नहीं हुई। सीज़र ने अपना सिर एक ओर लुढ़का दिया और बोलना बंद कर दिया। उसके पश्चात् तो दिन पर दिन कमज़ोर होता गया। ब्रांडी से भी इस बार कोई लाभ नहीं हुआ। एक दिन मैंने उसे सोफ़े पर अपनी दोनों टाँगें ऊपर किए मरा हुआ पाया। बेचारा सीज़र! अपनी बुरी आदतों के कारण पूरा जीवन भी न जी सका।

मैंने अपने बगीचे के एक कोने में एक गड्ढा खोदा, उसमें उसकी लाश को रखकर आलमारी पर रखे सारे क्लिप और सारे ब्रश रखकर उसे दफ़ना दिया। बेचारे ने इतने श्रम से इन्हें इकट्ठा किया था, तो उचित ही था कि मैं इन सबको उसके साथ दफ़नाता । गड्ढा भरते-भरते उसकी सारी प्यारी शैतानियाँ मेरे मस्तिष्क में एक-एक करके गुज़र गईं। आख़िर अपनी आँखें पोछता हुआ उठकर मैं अपने कमरे की ओर चला गया।

शब्दार्थ

प्रयत्न	–	कोशिश
दफ़नाना	–	कब्र में रखना
नामकरण	–	नाम रखना
एकत्र करना	–	इकट्ठा करना

प्रश्न :–

1. कौआ कहाँ से गिर गया था?
2. लेखक उसे घर क्यों ले आया?
3. दादा जी और लेखक ने कौए की सेवा कैसे की?
4. दादी जी सीज़र से क्यों परेशान हो गईं?
5. सीज़र को पिंजरे में क्यों नहीं रखा गया?
6. तोता और सीज़र आपस में किस प्रकार लड़ते थे?
7. संतोष मौसी को सीज़र का कौन सा व्यवहार अच्छा लगा और कौन सा व्यवहार बुरा?
8. सीज़र के किस व्यवहार के कारण दादी जी का ब्लड प्रेशर बढ़ गया?
9. सीज़र की टाँग कब टूट गई?
10. लेखक की आँखों में आँसू क्यों आने लगे?
11. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
12. मुहावरे का अर्थ बताइए–

(1.) नाक में दम करना

पाठ – 12

पंच परमेश्वर

–प्रेमचंद

अलगू चौधरी और जुम्मन शेख़ में बड़ी मित्रता थी। अलगू चौधरी ने जुम्मन शेख़ के पिता से उसके साथ ही शिक्षा पाई थी। दोनों को एक दूसरे पर पूरा भरोसा था और गाढ़े समय में दोनों मित्र एक दूसरे का साथ खुलकर देते थे। जब अलगू चौधरी कहीं बाहर जाता तब अपना घर जुम्मन के भरोसे छोड़ जाता, इसी तरह जुम्मन अपने घर–बार की ज़िम्मेदारी अलगू चौधरी को सौंप जाता था।

जुम्मन की एक बूढ़ी मौसी थी। जुम्मन के सिवाय इस दुनिया में उसका कोई न था। वह जुम्मन के साथ ही रहती थी। जब तक उसने अपने खेत और घर–संपत्ति जुम्मन के नाम नहीं लिख दी, तब तक उसकी पूरी ख़ातिरदारी होती रही लेकिन संपत्ति लिखते ही उसकी ख़ातिरदारी में कमी आ गई। यहाँ तक कि दाल–रोटी के भी लाले पड़ने लगे। जुम्मन की पत्नी गर्म मिज़ाज की थी, वह रोटियों के साथ कड़वी बातें भी कहने लगी– बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी। दो–तीन बीघे ऊसर ज़मीन क्या दे दी, मानो हमें ख़रीद लिया। जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गाँव ख़रीद लेते।

जुम्मन शेख़ भी निष्ठुर हो गया था। कुछ दिन ख़ालाजान ने सुना और सहा पर जब न सहा गया तो जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने उसकी ओर कुछ ध्यान न दिया। अंत में एक दिन उसकी मौसी ने कहा, "बेटा तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न हो सकेगा। तुम मुझे रुपए दे दिया करो। मैं अपना पका–खा लूँगी।"

जुम्मन ने दुष्टता से उत्तर दिया, "रुपए क्या यहाँ फलते हैं?" मौसी ने नम्रता से कहा, "बेटा! मुझे भी तो अपना पेट भरना है।" जुम्मन ने क्रुद्ध होकर कहा, "तो मैं क्या यह थोड़े ही समझा था कि तुम मौत से लड़कर आई हो।"

अब मौसी के पास पंचायत बुलाने के अलावा कोई चारा न था। मौसी ने दौड़-धूप करके पंचायत बैठाई। जब सरपंच चुनने की बात पर जुम्मन आनाकानी करने लगा तब मौसी ने अलगू चौधरी को अपना सरपंच चुना। अलगू चौधरी ने कहा, "जुम्मन मेरा मित्र है। मुझे सरपंच मत बनाओ। "मौसी ने गंभीर स्वर में कहा, "बेटा दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न दुश्मन। पंच के दिल में ख़ुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह ख़ुदा की तरफ़ से निकलती है।"

जुम्मन यह सोचकर मन ही मन ख़ुश था कि मेरा मित्र ही सरपंच है, वह निश्चय ही मेरे पक्ष में फ़ैसला देगा। अलगू चौधरी जुम्मन का मित्र था परंतु मौसी की बात सुनकर उसका सोया ईमान जाग उठा। वह सरपंच बना। उसके आस-पास अन्य पंच बैठे। पंचों ने बुढ़िया के मामले पर विचार किया। अलगू ने जुम्मन से ऐसे-ऐसे प्रश्न किए कि उसके होश ठिकाने आ गए। जुम्मन हैरान था कि क्या अलगू उसकी दोस्ती भूल गया जो इस मामले में ऐसे प्रश्न कर रहा है।

आखिर अलगू ने फ़ैसला सुनाया- "जुम्मन शेख़, पंचों ने इस मामले पर विचार किया है। हमारी राय यह है कि मौसी के खेत से इतनी कमाई होती है कि उसे माहवार खर्च दिया जा सके। यदि तुम इस बात से राज़ी नहीं हो तो खेतों की लिखा-पढ़ी तुम्हारे नाम नहीं रहेगी।"

उस दिन से जुम्मन अलगू चौधरी का जानी दुश्मन बन गया। वह अलगू चौधरी से बदला लेने का मौका ढूँढ़ता रहता। शीघ्र ही उसे ऐसा मौका मिल गया।

अलगू ने बैलों की एक नई जोड़ी ख़रीदी थी। दोनों बैल मज़बूत और कमाऊ थे। पंचायत का एक महीना भी पूरा नहीं हुआ था कि उनमें से एक बैल मर गया। जुम्मन ने दोस्तों से कहा, "देखा, यह दग़ाबाज़ी की सज़ा है। इंसान भले ही संतोष कर जाए पर ख़ुदा बदी की सज़ा देकर ही रहता है।, "अब अकेला बैल अलगू के काम का न था इसलिए उसने गाँव के बनिए समझू साहू के हाथ बैल बेच दिया। एक महीने में बैल के दाम चुकाने का वादा ठहरा।

समझू साहू गाँव से अनाज, गुड़ आदि लादकर मंडी ले जाता और वहाँ से नमक, तेल आदि गाँव लाता। नया और मज़बूत बैल पाकर वह दिन में तीन-चार चक्कर लगाने लगा। बैल से मेहनत इतनी लेता पर उसके दाने-पानी का उचित प्रबंध न करता, परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में बैल की हड्डी-पसली दिखाई देने लगी।

एक दिन चौथी बार में साहू ने दुगना बोझ लादा। दिनभर के थके जानवर के पैर न

उठते थे पर साहू जी कोड़े मार-मारकर उसे दौड़ाने लगे। थोड़ी दूर जाकर बैल सुस्ताने के लिए रुकना चाहता था लेकिन साहू जी को जल्दी पहुँचने की चिंता थी। उन्होंने कई कोड़े बड़ी निर्दयता से बैल पर बरसाए। बैल ने जी-जान से ज़ोर लगाया पर अब शक्ति ने जवाब दे दिया। वह ज़मीन पर गिरा, ऐसा गिरा कि फिर उठ न सका। वह मर चुका था।

इस घटना को हुए कई महीने बीत चुके थे। अलगू जब समझू से अपने बैल के दाम माँगता तब समझू उसे जली-कटी सुनाने लगता। हारकर अलगू चौधरी को पंचायत बुलानी पड़ी। समझू को अलगू और जुम्मन के बैर का हाल मालूम था इसलिए उसने जुम्मन को सरपंच चुना।

सरपंच के आसन पर बैठते ही जुम्मन का मन बदल गया। वह अलगू से अपना पुराना बैर-भाव भूल गया। पचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किए। अलगू चौधरी और समझू साहू ने अपनी-अपनी बातें बताईं। सभी पंच इस बात पर सहमत थे कि समझू साहू को बैल का मूल्य देना चाहिए परंतु दो पंच समझू साहू की ओर थे। अन्य पंच कीमत दिलाने के अलावा समझू को दंड देना चाहते थे क्योंकि उसने बैल को निर्दयता से मारा था। उनके अनुसार बैल की मृत्यु इस कारण हुई थी कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया था और उसके चारे-पानी का अच्छा प्रबंध न था।

अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया- "अलगू चौधरी और समझू साहू ! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह से विचार किया। समझू साहू के लिए उचित है कि वह बैल का पूरा मूल्य चुका दे। जिस वक्त उसने बैल खरीदा था उस समय उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय अलगू ने पूरी कीमत ले ली होती तो पंचायत के सामने यह सवाल ही न उठाया जाता।"

उपस्थित जनता जयकार कर उठी, "पंच परमेश्वर की जय।"

सभी कह रहे थे, " इसी को न्याय कहते हैं- दूध का दूध और पानी का पान। यह मनुष्य का काम नहीं, यह परमेश्वर का काम है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है?"

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आया और उसके गले लिपटकर बोला, " भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की तब से मैं तुम्हारा शत्रु बन गया था, पर आज मुझे पता चला कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का मित्र रहता है, न शत्रु। न्याय के सिवाय उसे कुछ नहीं सूझता। "अलगू भी ख़ुशी से रोने लगा। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। दोनों उस दिन से फिर दोस्त हो गए। मित्रता की मुरझाई बेल फिर से हरी हो गई।

शब्दार्थ

सिवाय	–	अलावा
ख़ातिरदारी	–	सत्कार
गर्म मिज़ाज	–	गुस्से वाला
कड़वी बातें	–	कठोर बातें
निष्ठुर	–	कठोर
निर्वाह	–	गुज़ारा
चारा	–	उपाय
सरपंच	–	Head of Village Assembly
आनाकानी	–	टालना
बदी	–	बुराई

प्रश्न :–

1. मौसी (खाला) पंचायत क्यों करना चाहती थी?
2. जुम्मन पंचायत करने के प्रस्ताव से प्रसन्न क्यों हुआ?
3. जुम्मन ने पंचायत में क्या निवेदन किया?
4. अलगू का फ़ैसला सुनकर जुम्मन क्यों चौंका?
5. अलगू को बैल क्यों बेचना पड़ा?
6. अलगू और समझू के बीच झगड़े का क्या कारण था?
7. समझू ने जुम्मन को पंच क्यों बनाया?
8. अलगू और जुम्मन के संबंध अच्छे न थे, फिर भी जुम्मन ने अलगू के पक्ष में फ़ैसला क्यों सुनाया?

पाठ – 13

भारतीय खान–पान और वेशभूषा

भारत में अनेक जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग रहते हैं। यह विविधता खान–पान और वेशभूषा में भी पाई जाती है। हमारे भोजन और पोशाक में हर युग में परिवर्तन होता रहा है। भारत में कई देशों और जातियों के लोग आए। उनके रहन–सहन का प्रभाव भी हम पर पड़ा है। पहले दाल–भात और रोटी ही मुख्य भोजन था। फिर खिचड़ी आई। पठान, मुग़ल और तुर्क पुलाव, कोरमा तथा कबाब लाए। यूरोपियनों से चाय, केक, डबलरोटी, बिस्कुट आदि आए।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में मिले नमूनों से यह मालूम होता है कि उस समय लोग गेहूँ, जौ, मटर, तिल, खजूर आदि का प्रयोग करते थे। अन्न के सिवाय माँस और मछलियाँ भी खाई जाती थीं। उस समय सूती कपड़ों का प्रयोग होने लगा था। पुरुषों की पोशाक में धोती, शाल आदि शामिल थे, जबकि महिलाएँ छोटा लहँगा और अंगरखा पहनती थीं।

पूर्व वैदिक युग में आर्यों का खान–पान बहुत सादा था। उनका मुख्य भोजन घी, दूध, चावल, जौ आदि था। वैदिक साहित्य में मूँग, उड़द आदि अनेक दालों का उल्लेख है। यज्ञों में सोमरस पीने का भी रिवाज़ था। आर्यों का वेश भी बहुत सादा था। शरीर के ऊपरी भाग के लिए एक उत्तरीय और नीचे भाग के लिए एक धोती पहनने का रिवाज़ था। पगड़ी भी पहनी जाती थी। कपड़े ऊन के या अलसी के रेशों के बने होते थे।

मध्य युग में उत्तर भारत की वेशभूषा और खान–पान में मुस्लिम प्रभाव बहुत स्पष्ट है। हिंदुओं के विवाह जैसे पवित्र संस्कारों में सेहरे और जामे का प्रयोग होता था। बालूशाही, शकरपारा, कलाकंद, गुलाबजामुन, बरफी, हलुआ आदि मिठाइयाँ इसी काल की देन हैं। प्राचीन साहित्य में मोदक (लड्डू) और खीर के आलावा बहुत कम मिठाइयों का वर्णन मिलता है ।

आज के भारतीय खान–पान में काफी विविधता मिलती है। खान–पान में आमतौर

से अन्न, दूध, दही, घी, मक्खन, फल, मिठाइयाँ, अचार, चटनियाँ, पापड़, चाय, कॉफ़ी आदि शामिल हैं। कुछ लोग माँस, मछली, अंडों, डबलरोटी आदि का प्रयोग करते हैं। दक्षिण भारत में दाल–भात, सब्ज़ी इडली, सांबर, डोसा, रसम, चटनी, दही, बड़ा आदि का अधिक प्रयोग होता है। पुरुषों की वेशभूषा में मुंडु और कुर्ता आदि शामिल हैं, जबकि महिलाएँ मुंडु–वेष्टि, साड़ी, लांगी, अंगिया या ब्लाउज़ आदि पहनती हैं।

कश्मीर में भात, मूँग की दाल, शाक–सब्जियों, दही और फलों का प्रयोग होता है। कुछ लोग माँस का इस्तेमाल भी करते हैं। पुरुष अधिकतर फ़ेरन (ढीला–ढाला बड़ा कुर्ता) और पाजामा पहनते हैं और स्त्रियाँ साड़ी, ब्लाउज़, कुर्ता–पजामा आदि पहनती हैं।

पंजाब में गेहूँ और मक्के की रोटी, छोले–कुलचे, दाल, सरसों का साग तथा अन्य सब्ज़ियाँ, फल, दूध, मक्खन, घी आदि का प्रयोग किया जाता है। यहाँ माँस, मछली, अंडा आदि भी खाया जाता है।

पुरुष तहमद–कमीज़, कुर्ता और पजामा पहनते हैं, जबकि स्त्रियाँ सलवार, कुर्ता, दुपट्टा आदि पहनती हैं। लगभग इसी प्रकार के खान–पान और वेशभूषा का प्रचलन हरियाणा में भी है।

हिंदी भाषी प्रदेशों में रोटी, दाल–भात, खिचड़ी, सब्ज़ियाँ, फल, दूध, घी, मिठाइयाँ आदि भोजन में शामिल हैं। बिहार, पूर्वी तथा उत्तरी उत्तर प्रदेश और पूर्वी मध्य प्रदेश (छत्तीसगढ़) में चावल अधिक खाया जाता है। कुछ लोग माँस, मछली, अंडे आदि भी खाते हैं। पुरुष अधिकतर धोती, पाजामा, कमीज़, कुर्ता, अंगरखा, बंडी, टोपी, साफ़ा आदि पहनते हैं और महिलाएँ लहँगा, अंगिया, साड़ी, ब्लाउज़ आदि पहनती हैं।

बंगाल में अधिकतर भात और मछली का इस्तेमाल होता है। इनके अतिरिक्त दाल, सब्ज़ी, दूध, घी, मिठाई, फल आदि का सेवन होता है। पुरुषों की वेशभूषा में धोती, कुर्ता और शाल शामिल हैं। महिलाएँ साड़ी और ब्लाउज़ आदि पहनती हैं।

असम में दाल–भात, सब्ज़ी, घी, दूध, दही, फल, मिठाई का सेवन अधिक होता है। मछली, माँस और अंडे भी खाए जाते हैं। पुरुष धोती, कमीज़, कुर्ता आदि धारण करते हैं और स्त्रियाँ अधिकतर मेखला, अंगिया और ओढ़नी पहनती हैं। नागालैंड में भी स्त्रियाँ यही कपड़े पहनती हैं।

अन्य प्रदेशों में भी दाल–भात, रोटी, सब्ज़ी, फल, दूध, दही, घी, मिठाई आदि का प्रयोग होता है। माँस, मछली और अंडों का सेवन भी होता है। पुरुषों की वेशभूषा में धोती,

पाजामा, कमीज़, कुर्ता, टोपी आदि शामिल हैं और स्त्रियों की वेशभूषा धोती, ब्लाउज़, अंगिया, लहँगा, ओढ़नी आदि से बनती हैं। महाराष्ट्र में महिलाएँ नौ गज़ लंबी साड़ियाँ पहनती हैं।

आजकल भारतीयों पर, विशेषकर शिक्षित वर्ग पर विदेशी सभ्यता का प्रभाव पड़ा है। पुरुषों ने पैंट, कोट, बुशशर्ट, जैकिट आदि पहनना शुरू कर दिया है और स्त्रियों ने भी परंपरागत वेशभूषा में अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया है।

शब्दार्थ

पोशाक	–	पहनने का वस्त्र
लहँगा	–	एक विशेष प्रकार का वस्त्र
सोमरस	–	एक प्रकार का पेय पदार्थ (Drink)
रिवाज़	–	रस्म
पगड़ी	–	Turban
अलसी	–	एक प्रकार का पौधा

प्रश्न :–

1. भारतीय खान–पान और वेशभूषा में विविधता क्यों पाई जाती है?
2. मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में मिले नमूनों से क्या जानकारी मिलती है?
3. पूर्व वैदिक युग में आर्यों का खान–पान और वेशभूषा कैसी थी?
4. मध्य युग में खान–पान और वेशभूषा पर किसका प्रभाव दिखाई देता है?
5. आज का भारतीय खान–पान किस प्रकार का है?
6. भारतीयों की वेशभूषा पर पाश्चात्य सभ्यता का क्या प्रभाव पड़ा?

पाठ – 14
एक बूँद

– अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद, कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी
आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी॥
देव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूँगी गिर अँगारे पर किसी,
चू पडूँगी या कमल के फूल में।
बह गयी उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुन्दर ओर आयी अनमनी॥
एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी॥
लोग यों ही हैं झिझकते सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किन्तु घर को छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूँद लौ कुछ और ही देता है कर॥

शब्दार्थ

जी	–	मन
बढ़ी	–	निकली
देव	–	भगवान
बदा	–	लिखा
अँगारा	–	जलता हुआ कोयला
काल	–	समय
अनमनी	–	बिना इच्छा के, उदास
झिझकते	–	संकोच करते
अक्सर	–	अधिकतर
लौं	–	की तरह, जैसे

प्रश्न:–

1. बूँद की मोती बनने तक की यात्रा अपने शब्दों में लिखिए।
2. बूँद की यात्रा कहाँ से आरंभ होती है?
3. घर से निकलकर बूँद क्या सोचती है?
4. बूँद मोती कैसे बन गई?
5. घर छोड़ते समय लोग सामान्यत: क्या सोचते हैं?
6. जो घर छोड़ देते हैं उन्हें क्या मिलता है?
7. 'एक बूँद' कविता के रचयिता का नाम लिखिए।

पाठ –15
ये भुलक्कड़ लोग

भुलक्कड़ों के साथ कभी आपका वास्ता पड़ा है?

नहीं पड़ा!

तो निश्चय ही आप भाग्यशाली हैं। आपका भी यदि भुलक्कड़ों से वास्ता पड़ा होता तो आपसे एकाध मनोरंजक घटना सुनते। ये भुलक्कड़ लोग कई बार तो ऐसी अद्भुत घटनाएँ घटा देते हैं कि क्या कहने।

अभी पिछले ही महीने मेरे भतीजे की शादी थी। हम लोग सपरिवार भाई साहब के घर पहुँचे। मेहमान काफ़ी संख्या में आ चुके थे। भाई साहब की ससुराल से उनके ससुर, छोटे साले और सलहज तथा बड़ी साली आई थीं। मेरे माता–पिता ने पड़ोस के मकानों में भी कुछ कमरे मेहमानों के लिए खाली कराए थे मगर हम लोग अपने ही घर में ठहरे थे।

दूसरे दिन मैंने पूछा कि बहू के लिए गहने वगैरह तो बन गए होंगे? भाई साहब ने भाभी से कहा कि मेहमानों को बहू के ज़ेवर दिखा दो। भाभी ने सब मेहमानों को बुलवाया। मेरी बड़ी बहिन की सास और ननद भी तब तक आ गई थीं। मेरे एक ममेरे भाई सपरिवार उसी दिन आए थे। नाना जी का तार आ गया था कि अस्वस्थता के कारण वे नहीं आ सकेंगे। लगभग सभी मेहमान ज़ेवर देखने के लिए जल्दी आ गए और विशेषकर स्त्रियाँ। भाभी ने चढ़ावे के ज़ेवरों का डिब्बा लाकर रखा। दरवाज़े बंद कर दिए जिससे नौकर व बाहर वाले न जान पाएँ कि जेवर घर पर ही रखे हैं।

ज़ेवर सबको बहुत पसंद आए। जड़ाऊ हार और झुमके तो बड़े सुंदर बने थे। हाथों के ठोस कड़े भी अच्छे थे। हाँ, लॉकेट मुझे बहुत सुंदर नहीं लगा। भाभी ने अपने लिए चूड़ियाँ और एक हीरे की अँगूठी बनवाई थी। जब सब लोग ज़ेवर देख चुके तो भाभी ने ज़ेवरों का डिब्बा बंद कर दिया। मेरी माँ ने उनसे कहा, "बहू, अब तो सब लोग आ गए हैं। तुम अपनी चूड़ियाँ

और अँगूठी पहन क्यों नहीं लेतीं?" भाभी ने ज़ेवरों का डिब्बा बंद कर दिया था। उसे फिर खोला और चूड़ियाँ व अँगूठी पहनकर डिब्बा बंद कर दिया और उसे सँभाल कर रख आईं। हम लोग कमरे से बाहर निकल आए और कुछ लोग काम में व्यस्त हो गए तथा कुछ गपशप करने लगे। तभी भाभी भारी भीड़ में चिल्लाईं " अजी सनते हो! यह अँगूठी तो बड़ी ढीली है। सुनार ने नाप ठीक नहीं रखा। अब क्या मैं शादी में उसका सिर पहनूँगी?"

भाई साहब ने समझाया– "इसमें चीख़ने की क्या बात है? मेहमानों को खाना खिला दो, ख़ुद खा लो। उसके बाद चलकर आधे घंटे में बदल लाएँगे, तब तक इसे पहनो मत सँभाल कर रख दो।"

'ठीक है' भाभी का जवाब था।

"लाओ, अँगूठी मुझे दे दो" भाई साहब ने कहा।

"मैं रख लेती हूँ। जाओ, जाकर हलवाई से कह दो कि पूरियाँ शुरू कर दे।

खाना परोसा गया। कटहल रसेदार था, परवल, आलू सूखे और बूँदी का रायता था। कचौड़ियाँ तो अच्छी बनी थीं लेकिन खीर में शक्कर कुछ कम थी। ख़ैर हम लोगों का ख़ाना खत्म हुआ। फिर औरतों ने खाया। भाभी ने जल्दी–जल्दी नौकरों–चाकरों की पंगत बिठाई। जब काम निपट चुका तो भाई साहब ने भाभी से कहा– "चलो अँगूठी बदल लाएँ।" ब्याह–शादी के चक्कर में और मेहमानों की ख़ातिरदारी में व्यस्त भाभी यह भूल गईं कि उन्होंने अँगूठी कहाँ रखी है? भाई साहब से बोलीं, "तुमको ही तो दी थी मैंने।"

भाई साहब गुर्राए– वाह! कमाल है। सबके सामने ही तो तुमने कहा था कि मैं क्या बच्ची हूँ जो गिरा दूँगी।"

"अरे हाँ, याद आया" साड़ी का पल्ला कमर में खोंस कर भाभी अँगूठी ढूँढने लगीं। बोलीं "मैंने शायद उसे बड़े शीशे की दराज़ में रखा था।" दराज़ देखी पर अँगूठी नदारद।

अब अँगूठी की खोजबीन शुरू की गई। यह सोचा जाने लगा कि इस कमरे में कौन–कौन आया था। नौकर–नौकरानियों से लेकर बच्चों तक से पूछताछ की गई। किसी को डाँटा गया, किसी से पूछा गया, नौकरों को धमकाया गया। शीशे की दराज़ कम्बख़्त ऐसी जगह थी जहाँ खाना खाने से पहले हर एक मेहमान अपनी शक्ल देखने और बाल ठीक करने ज़रूर आया होगा।

मिनटों में यह ख़बर सब मेहमानों में फैल गई। सब एक दूसरे को शक की निगाह से देख रहे थे। जगह-जगह फुसफुसा कर बातें हो रही थीं कि किसने, कब, क्या चीज़ ग़ायब की थी। भाई साहब कह रहे थे "शीशे की दराज़ में रखने से तो अच्छा था कि अँगूठी चौराहे पर रख आतीं। भला यह भी कोई रखने की जगह है?" भाभी ने जवाब दिया, "रखने की जगह क्यों नहीं है, मैं अपना कीमती सामान यहीं रखती हूँ। मुझे क्या पता था कि इस घर में कुछ चोर भी आए हुए हैं।" भाई साहब गुस्से से बिलबिला उठे-"अब अपनी बकवास बंद करोगी या नहीं?"

कुछ मेहमान बिस्तर बाँधने लगे क्योंकि सभी खाते-पीते घर के लोग थे। चाहें तो एक छोड़ दस अँगूठियाँ ख़रीद दें पर चंडिका बनी भाभी से कहे कौन? जो बोले उसी के लिए कहा जाएगा, "चोर की दाढ़ी में तिनका।"

सारे घर का वातावरण बदल गया था। बच्चे 'ट्रंकों' के नीचे सफ़ाई कर रहे थे। औरतें चौके से लेकर गुसलख़ाने तक अँगूठी ढूँढ़ रही थीं।

मैंने भाभी को एक तरफ़ ले जाकर पूछा- "क्या आपको किसी पर शक है?" "अरे, किसी एक पर हो तो बताऊँ।" वे रुआँसी हो गईं।

अब मुझे भी गुस्सा आ गया। घबराहट और परेशानी के कारण भाभी को पसीना आ गया था। वे धोती के पल्ले से मुँह पोंछने लगीं। कमर में ठुँसा पल्ला खुल गया और देखा कि चमकती हुई अँगूठी उसी में बँधी थी। पल भर में शोर मच गया। "अँगूठी मिल गई, वह बड़ी बहू के पल्ले में बँधी हुई थी।" अब दृश्य ने बिल्कुल दूसरा रूप ले लिया था। बड़ी भाभी को काटो तो ख़ून नहीं। वे सबसे माफ़ी माँग रही थीं। भाई साहब का पारा सातवें आसमान पर था।

-देवराज दिनेश की रचना पर आधारित

शब्दार्थ

भाग्यशाली	–	अच्छी तकदीर वाला
वास्ता	–	नाता, संबंध
अद्भुत	–	अनोखा

मेहमान	–	अतिथि
ज़ेवर	–	आभूषण
जड़ाऊ	–	रत्न जड़े हुए
चीख़ना	–	चिल्लाना
पंगत बैठाना	–	पंक्ति या लाइन में बैठाना
गुर्राए	–	क्रोधित होकर बोले
फुसफुसाहट	–	धीरे–धीरे बोलना

प्रश्न :–

1. शादी में कौन–कौन मेहमान आए थे?
2. चढ़ावे के ज़ेवरों में कितने प्रकार के ज़ेवर बनवाए गए थे?
3. भाभी के लिए कौन से ज़ेवर बनवाए गए थे?
4. खाने में कितने प्रकार के व्यंजन बने थे?
5. मेहमानों को ज़ेवर दिखाते समय घर का दरवाज़ा क्यों बंद कर दिया गया?
6. खोई हुई अँगूठी कहाँ मिली?
7. निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे–

(1) " शीशे की दराज़ में रखने से तो अच्छा था कि अँगूठी चौराहे पर रख आती"।

(2) " मुझे क्या पता था कि इस घर में कुछ चोर भी आए हुए हैं"।

(3) " ये भुलक्कड़ लोग" कहानी के कहानीकार कौन हैं?

पाठ – 16

वन संरक्षण

वन अधिकारी – नमस्कार, मुखिया जी।

मुखिया – नमस्कार, आइए साहब।

वन अधिकारी – मुखिया जी। वास्तव में मैं आपके पास बहुत ज़रूरी बातचीत करने आया हूँ। कुछ लोग पेड़ काटकर लकड़ियाँ चुराते हैं।

मुखिया – साहब, इतने बड़े जंगल में से लोग यदि कुछ लकड़ियाँ ले लेंगे तो क्या फ़र्क पड़ेगा? आख़िर सरकार वनों की रक्षा के लिए इतनी चिंता क्यों करती है?

वन अधिकारी – मुखिया जी, इस प्रकार लकड़ी काटने से पेड़ों की कमी होती है जिससे बहुत नुकसान होता है। इस प्रकार की कटाई से तब नुकसान नहीं होता था जब देश में बड़े-बड़े जंगल थे लेकिन अब ऐसा नहीं है। देश की 1/3 भूमि पर जंगल होने चाहिए परंतु अब हमारे देश की केवल 1/6 भूमि पर ही जंगल हैं। ऐसी स्थिति में पेड़ों की कटाई को रोकना ही होगा।

मुखिया – साहब वनों से हमें क्या लाभ हैं?

वन अधिकारी – वन वातावरण की अशुद्ध वायु को सोख़कर शुद्ध वायु देते हैं जो प्राणियों के लिए आवश्यक है। वनों से जड़ी-बूटियाँ मिलती हैं, दवाइयाँ बनती हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में बसे लोगों को वर्षा के जल पर ही निर्भर रहना पड़ता है। अच्छी उपज के लिए भी वर्षा का जल अधिक उपयोगी होता है। वनों के कम होने से वर्षा कम होगी और वर्षा कम होने से सूखा पड़ सकता है।

मुखिया – वनों से और क्या-क्या लाभ होते हैं ?

वन अधिकारी	–	वन, बाढ़ को रोकने में सहायक होते हैं। पेड़ों को काटने से मिट्टी पानी के साथ बहकर नदियों में पहुँच जाती है । इससे नदियों की गहराई कम हो जाती है जिससे बाढ़ें आती हैं। बाढ़ से हमें कितना नुकसान होता है यह आप जानते ही हैं। इसके अलावा वनों से वन्य प्राणी सुरक्षित रहते हैं जो देश की संपत्ति हैं। पेड़ों से हमें रबर, कागज़, दियासलाई और लकड़ी भी प्राप्त होती है। सरकार वनों की कटाई पर ही रोक नहीं लगा रही है बल्कि पेड़ों को लगाने पर भी ज़ोर दे रही है।
मुखिया	–	साहब आज आपने बहुत अच्छी जानकारी दी। हम कोशिश करेंगे कि वनों को न काटें और अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ।

शब्दार्थ

संरक्षण	–	सुरक्षा, देखभाल
रक्षा	–	बचाव
फ़र्क	–	अंतर
उपयोगी	–	आवश्यक
सुरक्षित	–	ठीक प्रकार से रखी हुई
वन्य प्राणी	–	जंगली जीव
उपज	–	फ़सल
अलावा	–	अतिरिक्त

प्रश्न:–

1. वनों से हमें क्या लाभ हैं?
2. देश की कितनी भूमि पर वन होने चाहिए?
3. हमें अधिक से अधिक पेड़ क्यों लगाने चाहिए?
4. बाढ़ आने का क्या कारण है?
5. आज प्रकृति का संतुलन क्यों बिगड़ गया है?
6. वनों के काटने से क्या हानि होती है?
7. पेड़ों से हमें क्या–क्या प्राप्त होता है?

पाठ –17

त्यौहारों का देश भारत

भारत एक विशाल देश है। यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। ये एक–दूसरे के त्यौहारों को बड़े उत्साह से मनाते हैं। भारत के मुख्य त्यौहार हैं– रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, महावीर जयंती, बुद्ध जयंती, ईद, मुहर्रम, क्रिसमस, गुरु नानक जयंती आदि। त्यौहारों की अधिकता के कारण भारत को त्यौहारों का देश कहते हैं। प्रायः हर धर्म में कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। इन त्यौहारों में से कुछ का संबंध ऋतुओं से है, कुछ का महापुरुषों से और कुछ का राष्ट्रीयता की भावना से।

जनवरी के दूसरे सप्ताह में 'मकर संक्रांति' का पर्व होता है। यह पर्व सारे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। इस दिन हिंदू लोग गंगा, यमुना आदि नदियों में स्नान करते हैं। यह नई फ़सल के आने की खुशी में मनाया जाता है। इसे तमिलनाडु में 'पोंगल' कहते हैं। दक्षिण भारत में लोग इस दिन नई फ़सल के धान कूटकर मीठे चावल बनाते हैं और सूर्य भगवान की पूजा करते हैं। वे गाय–बैलों को नहलाते हैं, उनके सींगों पर रंग लगाते हैं तथा उनकी पूजा करते हैं। पंजाब में संक्रांति की पूर्व संध्या में लोढ़ी का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन लोग तिल और गुड़ की गज़क–रेवड़ी खाते हैं।

26 जनवरी को 'गणतंत्र दिवस' मनाया जाता है। यह हमारा राष्ट्रीय त्यौहार है। इस दिन भारत के शहरों-गाँवों में उत्सव होते हैं। भारत सरकार की ओर से दिल्ली में इसका विशेष आयोजन किया जाता है। इस दिन राजपथ पर विशाल परेड होती है, इसमें सभी राज्यों की झाँकियाँ निकाली जाती हैं।

फ़रवरी में शिवरात्रि का त्यौहार होता है। इस दिन शिव के मंदिरों में बड़ी धूमधाम होती है। भक्तजन उपवास रखते हैं। शिव की पूजा के बाद वे फल और प्रसाद ग्रहण करते हैं।

मार्च में होली का त्यौहार आता है। होली को रंगों का त्यौहार कहते हैं। होली की पूर्व

संध्या को सार्वजनिक स्थानों पर महीने भर से जमा किए हुए लकड़ियों के ढेर को जलाते हैं। इसमें चनों के 'होले' भूनते हैं और गन्ने को भी भूनकर चूसते हैं।

प्राचीनकाल में इस अवसर पर लोग यज्ञ करते थे। यह उसी का प्रतीक है। दूसरे दिन लोग होली खेलते हैं। वे एक-दूसरे पर रंग डालते हैं और एक-दूसरे को गुलाल लगाते हैं। वे रंग डालने के साथ खूब नाचते-गाते हैं। लोग होली मिलने के लिए एक-दूसरे के यहाँ जाते हैं और एक-दूसरे को मिठाई खिलाते हैं। इस दिन लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं। होली के दिन पुराने दुश्मन भी गले मिलकर दोस्त बन जाते हैं।

अप्रैल मास में नवमी के दिन राम का जन्म हुआ था। इसलिए हिंदू रामनवमी का त्यौहार मनाते हैं। केरल में 'पूरम' का उत्सव भी इसी महीने में पड़ता है। इसी मास में मुसलमानों का 'मुहर्रम' भी पड़ता है। मुहर्रम के दिन ताजियों का जुलूस देखने लायक होता है। वैशाख की पहली तारीख को 'वैशाखी' होती है। वैशाखी पर नदियों में स्नान का विशेष महत्व है। वैशाखी सिखों का भी प्रसिद्ध त्यौहार है। इस दिन युवक मस्ती में 'भाँगड़ा' करते हैं और स्त्रियाँ 'गिद्दा' नाच करती हैं। वैशाखी के दिन केरल में 'विशु' त्यौहार मनाया जाता है।

जून मास में पुरी में 'रथयात्रा' उत्सव होता है। यह भगवान जगन्नाथ (विष्णु) का त्यौहार है। पुरी में तीन बड़े रथों पर जगन्नाथ, बलभद्र और उनकी बहन सुभद्रा की मूर्तियाँ रखी जाती हैं। इन्हें भक्तजन खींचते हैं। लाखों लोग इस रथ यात्रा को देखते हैं।

अगस्त में श्रावण पूर्णिमा के दिन 'राखी' का त्यौहार होता है। 'रक्षाबंधन' भी कहते हैं। इस दिन बहिनें अपने भाइयों के हाथ में 'राखी' बाँधती हैं। बहिनें भाई को राखी बाँधकर अपनी रक्षा का भार भाई को सौंप देती हैं।

भाद्रपद की अष्टमी के दिन 'कृष्ण' का जन्म हुआ था। इसलिए इसे 'कृष्णजन्माष्टमी' कहते हैं। इस दिन भक्तजन उपवास रखते हैं और आधी रात को कृष्ण के जन्म के अवसर के बाद पूजा करके भोजन करते हैं। 15 अगस्त, 1947 को सैकड़ों सालों की ग़ुलामी के बाद भारत आज़ाद हुआ था। इसलिए इस दिन हमारा राष्ट्रीय त्यौहार 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया जाता है। पंद्रह अगस्त का मुख्य समारोह दिल्ली के लाल किले पर होता है। इस दिन प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्र ध्वज फहराते हैं और राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करते हैं।

अक्टूबर में 'दशहरे' का त्यौहार मनाया जाता है। दशहरे के दिन क्षत्रिय लोग शस्त्रों

की पूजा करते हैं। श्री राम ने दशमी के दिन रावण पर विजय पाई थी। इसलिए इसे 'विजयदशमी' भी कहते हैं।

इस दिन शाम को रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के पुतले जलाए जाते हैं। यह त्यौहार राम की विजय की याद दिलाता है। बंगाल में इन दिनों दुर्गा पूजा मनाते हैं। इस अवसर पर दुर्गा की मूर्ति की पूजा होती है और दशहरे के दिन उसका विसर्जन होता है।

दशहरे के बीस दिन बाद कार्तिक अमावस्या के दिन 'दीपावली' का त्यौहार होता है। दीवाली के दिन वैश्य लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं। कहते हैं इस दिन रामचंद्र जी लंका को जीतकर अयोध्या वापस आए थे इसी ख़ुशी में चारों ओर दीवाली की गई थी। इसलिए आज भी लोग अपने इष्ट-मित्रों को मिठाई देते हैं। सभी हिंदू इस त्यौहार को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

महाराष्ट्र में 'गणेश चतुर्थी' के त्यौहार को बड़े उत्साह से मनाया जाता है। लोग गणेश की प्रतिमा की पूजा करते हैं। पूजा के बाद गणेश की मूर्ति की सवारी निकालते हैं और गणेश की प्रतिमा का नदी में विसर्जन किया जाता है।

25 दिसंबर को क्रिसमस का त्यौहार मनाया जाता है। यह ईसाइयों का प्रमुख त्यौहार है। इस दिन क्रिसमस 'ट्री' बनाया जाता है। माता-पिता बच्चों को उपहार देते हैं।

शब्दार्थ

विशाल	–	बड़ा
उत्साह	–	उमंग
उपवास	–	व्रत
हौले	–	धीरे
यज्ञ	–	हवन
सौंप देना	–	ज़िम्मेदारी देना

प्रश्न :–

1. भारत को त्यौहारों का देश क्यों कहा जाता है?
2. भारत के कुछ प्रमुख त्यौहारों के नाम लिखिए।
3. मकर संक्रांति का पर्व किस–किस रूप में मनाया जाता है?
4. भारत के राष्ट्रीय त्यौहार कौन–कौन से हैं?
5. होली को रंगों का त्यौहार क्यों कहते हैं?
6. रथ यात्रा का उत्सव कैसे मनाया जाता है?
7. दशहरे के त्यौहार को 'विजयदशमी' क्यों कहते हैं?

पाठ – 18
हार की जीत

–सुदर्शन

किसी गाँव के बाहर बाबा भारती नाम के एक साधु रहते थे। बाबा भारती के पास सुल्तान नाम का एक सुंदर घोड़ा था। बाबा भारती अपने घोड़े को बहुत प्यार करते थे।

पास के जंगल में खड़ग सिंह नाम का एक डाकू रहता था। डाकू खड़ग सिंह ने भी सुल्तान की प्रशंसा सुनी। एक दिन वह बाबा भारती के पास पहुँचा और उनको प्रणाम करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा– 'कहो कैसे आए?' खड़ग सिंह ने कहा–''सुल्तान की बहुत प्रशंसा सुनी थी। उसे देखने आया हूँ।''

दोनों अस्तबल पहुँचे। बाबा भारती का घोड़ा देखकर खड़ग सिंह को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने मन में सोचा कि ऐसा घोड़ा तो मेरे पास होना चाहिए था। वह मन ही मन बाबा भारती से घोड़ा छीनने की योजना बनाने लगा।

कुछ समय बाद फिर एक दिन बाबा भारती सुल्तान पर बैठकर घूमने जा रहे थे। रास्ते में एक तरफ़ से आवाज़ आई–'' ओ बाबा! ज़रा मेरी बात भी सुन लो।'' बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा कि एक पेड़ के नीचे एक बीमार व्यक्ति पड़ा है। बाबा भारती ने पूछा–'' क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?'' बीमार व्यक्ति ने कहा,'' मैं बीमार हूँ, मुझे रामावाला तक पहुँचा दो।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर उस बीमार व्यक्ति को घोड़े पर चढ़ा लिया और स्वयं लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे। अचानक उन्हें एक झटका लगा और लगाम उनके हाथ से छूट गई। उन्होंने देखा कि बीमार व्यक्ति घोड़े पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ा कर लिए जा रहा है। उनको बहुत आश्चर्य हुआ। अब उन्होंने डाकू खड़ग सिंह को पहचान लिया। बाबा भारती चिल्लाकर बोले–''खड़ग सिंह, ज़रा ठहर जाओ।

खड़ग सिंह ने घोड़ा रोक दिया और कहा– "बाबा, मैं यह घोड़ा अब नहीं दूँगा।" 'ठीक है' बाबा भारती ने कहा, "परंतु यह बात किसी को मत बताना।"

खड़ग सिंह ने सोचा कि बाबा घोड़ा वापस देने के लिए कहेंगे परंतु उन्होंने ऐसा नहीं कहा। उसने बाबा जी से फिर पूछा,"बाबा जी इसमें आपको क्या डर है? "बाबा भारती ने उत्तर दिया, "यदि लोगों को इस बात का पता चल गया तो वे किसी ग़रीब की मदद नहीं करेंगे।"

बाबा भारती यह कहकर चले गए। खड़ग सिंह सोचने लगा–" बाबा भारती कितने महान हैं? केवल यही चिंता है कि इस बात से कहीं लोग गरीबों और बीमारों पर विश्वास करना न छोड़ दें।"

रात के अँधेरे में खड़ग सिंह बाबा भारती के अस्तबल में आया और चुपचाप घोड़ा बाँधकर चला गया।

सुबह बाबा भररती ने जब अस्तबल में सुलतान को देखा तो वे घोड़े से लिपट कर रोने लगे। फिर बोले, "अब कोई भी बीमार और ग़रीबों पर अविश्वास नहीं करेगा।"

शब्दार्थ

साधु	–	सन्यासी, संत
प्रशंसा	–	बड़ाई
अस्तबल	–	घोड़े बाँधने का स्थान
लगाम	–	घोड़े के मुँह में बाँधी गई रस्सी
तनकर	–	अकड़कर
आश्चर्य	–	अचरज
चिंता	–	फ़िक्र

प्रश्न :–

1. बाबा भारती के घोड़े का नाम क्या था?

2. घोड़ा देखकर खड़ग सिंह के मन में क्या विचार आया?

3. घोड़ा लेने के लिए खड़ग सिंह ने क्या उपाय सोचा?

4. बाबा भारती ने खड़ग सिंह से क्यों कहा "यह बात किसी को मत बताना"

5. खड़ग सिंह ने घोड़ा अस्तबल में क्यों बाँध दिया?

6. घोड़े को देखकर बाबा भारती ने क्या कहा?

7. निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे–

(1.) "क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?"

(2.) "कहो कैसे आए?"

पाठ – 19
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म बिहार में जिला सिवान के जीरादेई गाँव में 3 दिसंबर, 1884 को हुआ था। इनके पिता श्री महादेव सहाय फ़ारसी के अंच्छे विद्वान थे। आयुर्वेद में उनकी गहरी रुचि थी। राजेन्द्र बाबू की माता बड़ी धार्मिक थीं। वे इन्हें बचपन में रामायण की कथाएँ सुनाया करती थीं। इनके जीवन पर कथाओं का बहुत प्रभाव पड़ा।

पाँच–छह वर्ष की अवस्था में मौलवी साहब ने गाँव में ही राजेन्द्र बाबू को पहला अक्षर ज्ञान दिया। इनकी आगे की शिक्षा छपरा में आरंभ हुई। राजेन्द्र बाबू बचपन से ही बहुत योग्य छात्र थे। उन्होंने सदैव सभी परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज से उन्होंने एम०ए० और बी०एल० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

उन्होंने कुछ दिनों तक मुज़फ्फरपुर के एक कॉलेज में अध्यापन किया। इसके बाद 1911 में राजेन्द्र बाबू ने कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत आरंभ की। पटना हाईकोर्ट बन जाने पर वे 1916 में वहाँ आकर वकालत करने लगे।

वे चंपारन के नील–सत्याग्रह के दौरान महात्मा गांधी से पहली बार मिले। महात्मा गांधी के सत्याग्रह कार्यक्रम से वे बहुत अधिक प्रभावित हुए और गांधी जी के भक्त हो गए।

राजेन्द्र बाबू ने 1918 में बिहार का प्रसिद्ध अंग्रेज़ी दैनिक समाचार पत्र 'सर्चलाइट' निकाला। 1920 में उन्होंने हिंदी साप्ताहिक 'देश' का प्रकाशन आरंभ किया।

1920 में राजेन्द्र बाबू असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए और उन्होंने वकालत छोड़ दी। राजेन्द्र बाबू के नेतृत्व में बिहार के बहुत–से कार्यकर्ता स्वराज और असहयोग का संदेश गाँव–गाँव पहुँचाने में लग गए। राजेन्द्र बाबू ने बिहार में उन दिनों कई जनसभाएँ कीं।

सन् 1930 में नमक सत्याग्रह आंदोलन आरंभ हुआ। बिहार में इस आंदोलन को

सफल बनाने के लिए राजेन्द्र बाबू ने कठिन परिश्रम किया। उन्हें इस आंदोलन में बड़ी सफलता मिली। इस सत्याग्रह में वे अपने साथियों के साथ पहली बार जेल भी गए।

लंदन की गोलमेज़ कान्फ्रेंस के बाद भारत में अंग्रेज़ सरकार का दमन बढ़ गया। राजेन्द्र बाबू को सदाकत आश्रम में 4 जनवरी, 1932 को गिरफ्तार कर लिया गया। छह महीने की सज़ा के बाद वे कांग्रेस के डिक्टेटर के रूप में फिर गिरफ़्तार कर लिए गए। इस प्रकार देश की आज़ादी के आंदोलन में वे कई बार जेल गए।

1934 में बिहार में भयंकर भूकंप आया था। इससे जान-माल की बहुत हानि हुई थी। जेल से रिहा होते ही राजेन्द्र बाबू ने बिहार के भूकंप-पीड़ितों के लिए "बिहार सेंट्रल रिलीफ़ कमेटी" बनाई। इस कमेटी ने भूकंप पीड़ितों की बहुत सहायता की।

1934 में राजेन्द्र बाबू कांग्रेस के सभापति चुने गए। यह वर्ष कांग्रेस का स्वर्ण जयंती का वर्ष था। स्वर्ण जयंती का मुख्य आयोजन बंबई में हुआ था। इस वर्ष ये पूरे भारत में जगह-जगह लोगों से मिले। अपने कोमल स्वभाव और योग्यता से इन्होंने भारत की जनता को बहुत प्रभावित किया।

मई, 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया, इसलिए राजेन्द्र बाबू को अध्यक्ष पद सँभालना पड़ा। 9 अगस्त, 1942 से 15 जून, 1945 तक राजेंद्र बाबू पटना जेल में नज़रबंद रहे। 02 दिसंबर, 1946 को वे भारत की अंतरिम सरकार में खाद्य एवं कृषि मंत्री बने। 11 दिसंबर, 1946 से 1949 तक वे भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे 12 वर्षों (1950-1962) तक भारत गणराज्य के राष्ट्रपति रहे।

राजेंद्र बाबू की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे राजनीति में रहते हुए भी सभी लोगों में प्रिय बने रहे। राष्ट्रपति भवन में भी वे सीधे-सादे ग्रामवासी बने रहे। सबके दिल पर उन्होंने सरलता और नम्रता की अमिट छाप छोड़ी।

राजेन्द्र बाबू हिंदी भाषा के बहुत प्रेमी थे। 1921 में उन्होंने बिहार विद्यापीठ स्थापित किया। 1923 से 1927 तक वे उसके कुलपति रहे। वे 1924 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बने। 1926 में बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, दरभंगा का उन्हें अध्यक्ष चुना गया। 1927 में राजेन्द्र बाबू संयुक्त प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन (कांगड़ी अधिवेशन) के अध्यक्ष बने। 1936 में वे अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन (नागपुर अधिवेशन) के अध्यक्ष चुने गए।

सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक विषयों पर वे सदैव लिखते रहे। उनके लेख हिंदी

और अंग्रेज़ी भाषा की पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते थे। ''भारतीय शिक्षा'', ''गांधी जी की देन'', ''साहित्य, शिक्षा और संस्कृति'', 'आत्मकथा' आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

13 मई, 1962 को उन्होंने भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण किया। इसी दिन राजेन्द्र बाबू को 'भारत रत्न' की उपाधि दी गई। उसी शाम को वे सदाकत आश्रम के लिए चल पड़े। वे 14 मई, 1962 को सदाकत आश्रम, पटना आ गए और जीवन के अंतिम क्षण तक वहीं रहे।

राजेन्द्र बाबू की शादी बारह वर्ष की उम्र में ही राजवंशी देवी के साथ हो गई थी। वे एक घरेलू महिला थीं। राष्ट्रपति भवन में आने से पहले वे जीरादेई गाँव में ही रही थीं। वे कभी भी राजेन्द्र बाबू के किसी कार्य में बाधा नहीं बनीं। 9 सितंबर, 1962 को श्रीमती राजवंशी देवी का देहांत हो गया। पत्नी के निधन से राजेन्द्र बाबू बहुत दुखी थे। उन्हीं दिनों देश में तरह–तरह के आंतरिक संकट उभर रहे थे। राजेन्द्र बाबू ने अपने निवास पर एक सभा बुलाई। उसमें उन्होंने राष्ट्रीय एकता पर बहुत ही प्रभावकारी भाषण दिया।

28 फरवरी, 1963 को सदाकत आश्रम में स्वाधीनता के इस सैनिक ने संसार से अंतिम विदाई ली। शोकाकुल राष्ट्र ने श्रद्धापूर्वक सजल नेत्रों से अपने राष्ट्रपुरुष को श्रद्धांजलि अर्पित की।

शब्दार्थ

फ़ारसी	–	उर्दू से मिलती–जुलती एक भाषा
आयुर्वेद	–	भारतीय चिकित्सा पद्धति
धार्मिक	–	Religious
असहयोग	–	सहयोग न करना, Non Cooperation
नेतृत्व	–	Leadership

भूकंप–पीड़ित	–	भूकंप के कारण दुखी
स्वर्ण जयंती	–	Golden Jubilee
अमिट	–	जो न मिटे, जिसे मिटाया न जा सके
शोकाकुल	–	चिंता से घिरा हुआ
श्रद्धा	–	बड़ों के लिए मन में होने वाला आदर का भाव

प्रश्न:–

1. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के जीवन पर किस चीज़ का प्रभाव पड़ा?
3. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गांधी से पहली बार कब मिले और उनके किस कार्यक्रम से प्रभावित हुए?
4. उन्होंने वकालत क्यों छोड़ी?
5. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कब–कब और किन कारणों से जेल गए?
6. 1950 से 1962 तक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद किस पद पर सुशोभित रहे?
7. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को भारत रत्न की उपाधि कब मिली?
8. राष्ट्रपति पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे कहाँ गए?
9. राजेन्द्र बाबू किस आंदोलन में पहली बार गिरफ्तार किए गए?
10. राजेन्द्र बाबू ने भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति पद से कब अवकाश ग्रहण किया?

पाठ – 20
बनजारे का गीत

–सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

कौन कह रहा बनजारों–सा यह जीवन बेकार है–
मैं सबका हूँ, सब मेरे हैं, सबसे मुझको प्यार है।
चाँद और तारों की छत है
दिशा–दिशा दीवार है,
सारी धरती मेरा आँगन
पूरब–पश्चिम द्‌वार हैं,
बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, बहुत बड़ा परिवार है,
सबके हित मधुकरी हमारी, सबके लिए सितार है।
जंगल, नदियाँ, पर्वत, झरने
मुझको रहे पुकार हैं,
कुंज–कुंज बैठी ख़ामोशी
मुझको रही निहार है,
इन लंबी सूनी सड़कों से ही मेरा व्यवहार है,
दिशा–दिशा में मेरी ही पगध्वनि का बंदनवार है।

कौन कह रहा बनजारों–सा यह जीवन बेकार है–
मैं सबका हूँ, सब मेरे हैं, सबसे मुझको प्यार है।

सब पर मेरी आशाएँ–
सब पर मेरा एतबार है,
आगे बढ़ते जाना मेरे
जीवन का व्यापार है।

शब्दार्थ

बनजारा	–	घूमने वाली एक जाति, जिप्सी
द्वार	–	दरवाज़ा
हित	–	लिए
मधुकरी	–	माँगकर पाया गया भोजन
पर्वत	–	पहाड़
खामोशी	–	शांति
झरना	–	Water fall
सूना	–	जहाँ कोई आता जाता नहीं
कुंज	–	A place surrounded by bushes and creepers
निहारना	–	देखना
व्यवहार	–	संबंध
पगध्वनि	–	पैरों के चलने की आवाज़

बंदनवार	–	दरवाजे पर लगाई जाने वाली पत्तों या कागज की माला
एतबार	–	विश्वास, भरोसा
सितार	–	A musical instrument

प्रश्न:–

1. दूसरी पंक्ति में बनजारों की कौन–सी विशेषता बताई गई है?
2. बनजारे कहाँ–कहाँ घूमते हैं, और क्यों?
3. पूरब–पश्चिम को ही द्वार क्यों कहा गया है?
4. बनजारे के जीवन का व्यापार क्या है?
5. व्याख्या कीजिए–

    (1) सबके हित मधुकरी हमारी, सबके लिए सितार है।

    (2) इन लंबी सूनी सड़कों से ही मेरा व्यवहार है,
    दिशा–दिशा में मेरी ही पगध्वनि का बंदनवार है।

    (3) बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, बहुत बड़ा परिवार है,

पाठ – 21
हमारी दिल्ली यात्रा

15 दिसंबर

आज कोहिमा के एक होटल में मैंने अपने मित्रों–खोले डोल्फ, जाकिनी अंगामी और अलीबा आओ के साथ अलीबा का जन्म दिन मनाया। हम सब ख़ुश थे। हमने 26 जनवरी की "गणतंत्र दिवस– परेड" देखने का कार्यक्रम बनाया।

23 जनवरी

हम चारों मित्र कोहिमा से कल शाम दीमापुर पहुँचे थे। दीमापुर से रात्रि बस पकड़कर प्रातः 6.00 बजे गुवाहाटी पहुँचे। आज 23 जनवरी को ब्रह्मपुत्र मेल से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। द्बितीय श्रेणी में पहले से ही आरक्षण था। ट्रेन में बहुत भीड़ थी।

25 जनवरी

गाड़ी ठीक समय पर सुबह छह बजे दिल्ली स्टेशन पहुँची। हम लोग टैक्सी से नागालैंड हाउस पहुँचे। दोपहर एक बजे हम लोग लाल–किला देखने पुरानी दिल्ली गए। इसे मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था। लाल पत्थरों से बना हुआ यह किला दो किलोमीटर के घेरे में है। किले में कई इमारतें हैं, जैसे– दीवाने आम, दीवाने ख़ास आदि। स्वतंत्रता दिवस (पंद्रह अगस्त) पर हमारे प्रधानमंत्री इसी किले पर झंडा फहराते हैं और राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं।

लाल किले से निकलकर हम चाँदनी चौक गए। चाँदनी चौक में दिगंबर जैन मंदिर, चिड़ियों का अस्पताल और गुरुद्वारा शीशगंज है। जैन मंदिर के पास एक विशाल मस्जिद है जिसका नाम 'जामा मस्जिद' है। इसे शाहजहाँ ने बनवाया था। चाँदनी चौक एक बड़ा व्यावसायिक केंद्र है। यहाँ हर प्रकार का सामान मिलता है। इस बाज़ार में ख़रीदारी के लिए दिन–भर भीड़ रहती है।

सायं छह बजे हम लोग "ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम" देखने दुबारा लाल किले के

बगीचे में गए। इसमें मुग़लों का इतिहास ध्वनि एवं प्रकाश – व्यवस्था के द्वारा दिखाया गया था। यह कार्यक्रम हम लोगों को बहुत पसंद आया।

26 जनवरी

हम चारों मित्र प्रातः 6.00 बजे ही "गणतंत्र दिवस–परेड" देखने पहुँचे। हमें इंडिया गेट के पास बैठने का स्थान मिला। प्रथम विश्व युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए सिपाहियों की याद में इंडिया गेट का निर्माण किया गया था। इसकी दीवारों पर उन सिपाहियों के नाम खुदे हैं। लोगों ने हमें बताया कि रात को रोशनी में इंडिया गेट बहुत ही सुंदर लगता है। इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन तक का मार्ग 'राजपथ' कहलाता है।

26 जनवरी 'गणतंत्र दिवस' पर राष्ट्रपति ने परेड की सलामी ली है। राष्ट्रपति भवन की ओर से परेड आरंभ हुई। परेड में नौ सेना, थल सेना और वायु सेना के सैनिकों ने भाग लिया। हमने परेड में टैंक, मिसायलें, रडार आदि देखे। सैनिक परेड के बाद पुलिस, होमगार्ड, स्काउट आदि की टोलियाँ आईं। इसके बाद कुछ चुने हुए राज्यों की झाँकियाँ भी निकलीं। हमारे प्रदेश नागालैंड की झाँकी भी थी। झाँकी में नागा लोगों के जीवन के कई दृश्य थे। इसे देखकर हम लोग बहुत ख़ुश हुए।

27 जनवरी

आज हम लोग सवेरे कुतुब मीनार देखने गए। इसे कुतुब–उद्दीन ऐबक ने बनवाया था। कुतुब मीनार लाल पत्थरों की है। यह मीनार 73 मीटर ऊँची है। पहले इसकी सात मंज़िलें थीं। अब पाँच मंज़िलें बची हैं। मीनार के पास छठी शताब्दी का लौह स्तंभ है। यह 7.20 मीटर ऊँचा है। इतने दिनों बाद भी इसमें जंग नहीं लगी है।

इसके बाद हम लोग महाभारत का 'पुराना किला' देखने गए। वहाँ से प्रगति मैदान होकर हम लोग अप्पूघर पहुँचे। यहाँ बिजली से चलने वाले बहुत बड़े–बड़े झूले थे। अप्पूघर से हम कनाट प्लेस आए। यह एक बड़ा व्यापारिक केंद्र है। कनाट प्लेस में भूमिगत पालिका बाज़ार है। इस बाज़ार में सभी प्रकार की आधुनिक वस्तुएँ मिलती हैं। यहाँ भूमिगत कार पार्किंग भी है।

कनाट प्लेस के पास ही 'जंतर-मंतर' वेधशाला है। इस वेधशाला को जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह ने बनवाया था। इसमें एक सूर्य घड़ी है। यह घड़ी सूर्योदय से सूर्यास्त तक ठीक समय बताती है।

28 जनवरी

आज हम लोगों ने कमल-जैसा 'लोटस टेंपल' देखा। इस मंदिर का वातावरण बहुत शांत था। इसके बाद हमने युमना नदी के किनारे राजघाट पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि देखी। बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग पर 'डॉल म्यूज़ियम' भी देखा। उसकी गुड़ियाँ देखकर हम बहुत प्रसन्न हुए।

राष्ट्रीय संग्रहालय में भारत की प्राचीन वस्तुएँ हैं। यह इंडिया गेट के पास है। यहाँ घूम कर हमें बहुत सी प्राचीन चीज़ों की जानकारी मिली। यहाँ हमने रेलों के पुराने इंजन और डिब्बे आदि देखे। संग्रहालय की बच्चों की रेलगाड़ी में बैठकर हमें बहुत अच्छा लगा। हमने वहाँ राजाओं के पुराने रेलवे-सैलून भी देखे।

मुझे और मेरे दोस्तों को दिल्ली घूमकर बहुत अच्छा लगा।

शब्दार्थ

प्रस्थान करना	–	किसी कार्य या यात्रा के लिए जाना, departure
आरक्षण	–	Reservation
इमारत	–	विशाल भवन, building
संदेश	–	Message
व्यावसायिक	–	व्यवसाय से संबंधित
दुबारा	–	दूसरी बार
वीरगति	–	युद्ध में प्राण देना (प्राण देना – मर जाना)
स्मृति	–	याद
सलामी	–	Salute
टोलियाँ	–	दल, group
दृश्य	–	Scene
शताब्दी	–	सौ वर्ष का समय
लौह-स्तंभ	–	लोहे का खंभा, iron pillar

व्यापारिक	–	व्यापार से संबंधित
भूमिगत	–	जमीन के अंदर, underground
वेधशाला	–	वह स्थान जहाँ यंत्रों की सहायता से ग्रह, नक्षत्रों आदि के बारे में जानकारी ली जाती है।
समाधि	–	महापुरुष के मृत्यु–स्थल पर उसकी याद में बनाया गया चबूतरा, tamb
संग्रहालय	–	Museum

प्रश्न :–

1. हमारे भारत में गणतंत्र दिवस किस दिन मनाया जाता है?
2. लाल किला किसने बनवाया था?
3. भारत के प्रधानमंत्री स्वतंत्रता दिवस पर झंडा कहाँ फहराते हैं?
4. चाँदनी चौक में कौन–कौन से देखने योग्य स्थान हैं?
5. ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रम में क्या दिखाया जाता है?
6. इंडिया गेट का निर्माण किनकी स्मृति में हुआ?
7. जंतर–मंतर वेधशाला किसलिए प्रसिद्ध है?
8. गणतंत्र दिवस की परेड के बारे में विस्तार से बताइए।
9. कुतुब मीनार के बारे में बताइए।
10. मित्रों ने रेल संग्रहालय में क्या देखा?

गृहकार्य

(क) 1. ''गणतंत्र दिवस–परेड'' का वर्णन कीजिए।

2. दिल्ली के कुछ देखने योग्य स्थलों का वर्णन कीजिए।

(ख) अपनी किसी यात्रा का विवरण 15 वाक्यों में लिखकर लाइए।

पाठ – 22

पर्स की तलाश

रंगनाथ : अरे कमला, मेरा पर्स नहीं मिल रहा है, कहीं तुमने देखा है क्या?

कमला : नहीं तो। कहाँ रखा था, आपने?

रंगनाथ : पैंट की जेब में रखा था। उसमें पूरे महीने का वेतन है भई।

कमला : जाएगा कहाँ ? आपने यहीं–कहीं रखा होगा? आप कहीं बाहर तो नहीं भूल आए। शाम को, दफ़्तर के बाद कहीं गए थे क्या?

रंगनाथ : दफ़्तर के बाद मैं गोपाल के यहाँ गया था। उसे कुछ पैसे देने थे।

कमला : कहीं, वहीं तो नहीं गिर गया?

रंगनाथ : नहीं मुझे अच्छी तरह याद है कि गोपाल के यहाँ से आने के बाद पर्स मेरी जेब में था। रास्ते में रमेश मिल गया था, उसके साथ मैंने कॉफ़ी पी और बिल मैंने ही चुकाया।

कमला : तो कहीं ऐसा तो नहीं कि पर्स जल्दबाज़ी में वहीं गिर गया हो? रेस्टोरेंट में तरह–तरह के लोग आते हैं। भगवान न करे कि किसी ऐसे–वैसे के हाथ लगे।

रंगनाथ : मुझे भी लगता है कि पर्स वहीं गिर गया। भगवान करे किसी भले आदमी के हाथ लगा हो। मैं अभी जाकर पता करता हूँ।

कमला : भगवान करे पर्स कहीं मिल जाए।

(नौकरानी का आगमन)

आज बहुत देर लगा दी शिवदेवी तुमने। चलो, पहले झाड़ू–पोंछा कर लो। चौका–बर्तन बाद में करना।

शिवदेवी : बीबी जी, अंदर से यह बटुआ मिला है। लगता है, बाबू जी से गिर गया है।

कमला : भगवान तेरा भला करे। ला, दे बटुआ। साहब तो सुबह से इसके लिए परेशान थे। कहाँ मिला तुझे?

शिवदेवी : अंदर कमरे में अलमारी के नीचे सफ़ाई कर रही थी, वहीं पड़ा मिला, बीबी जी।

कमला : कपड़े टाँगते समय साहब से ही गिर गया होगा।

शब्दार्थ

जल्दबाजी	–	शीघ्रता
बटुआ	–	पर्स

प्रश्नः–

1. पर्स कहाँ मिला और किसको मिला?
2. किसका पर्स खोया था?
3. 'पर्स की तलाश' वार्तालाप में कुल कितने पात्र हैं?
4. पर्स में कितने रुपए थे?

पाठ – 23

ईदगाह

पात्र–परिचय

अमीना	–	लगभग 65–70 साल की एक बूढ़ी औरत।
हामिद	–	अमीना का पोता। उम्र लगभग चार–पाँच साल।
महमूद, नूरे, मोहसिन, सम्मी	–	हामिद के साथी। महमूद सबसे बड़ा है।

(1)

अमीना – (सोचते हुए एकालाप) – आज ईद है। सभी ईदगाह जाने की तैयारियाँ कर रहें हैं। सभी बच्चे बहुत खुश हैं। वहाँ मेला देखेंगे, मिठाइयाँ खाएँगे, खिलौने ख़रीदेंगे। बच्चे अच्छे–अच्छे कपड़े पहन रहे हैं। कुछ के पास नए जूते भी हैं। (परेशान सी होती हुई) पर हामिद? उसके पास तो पुराने जूते भी नहीं हैं। नंगे पैर तीन कोस जाएगा और तीन कोस लौटेगा। और, मेरे पास केवल छह पैसे हैं– क्या उसे दूँ, और क्या ईदी माँगने वालों को। फिर, मेले में भीड़ भी बहुत होती है। भीड़ में खो गया तो क्या होगा।

(तभी हामिद दादी के पास आता है)

हामिद – दादी! मैं ईदगाह जाऊँगा।

अमीना – किसके साथ जाएगा? अकेला नहीं जाने दूँगी।

हामिद – अकेला क्यों, सभी तो जा रहे हैं। महमूद, नूरे, मोहसिन और सम्मी सभी जा रहे हैं।

अमीना – अच्छा तो जा। यह ले तीन पैसे, कुछ खा–पी लेना। ध्यान रखना गिरा मत देना।

(हामिद पैसे जेब में रखता है। मुस्कराता हुआ चला जाता है।)

(2)

(रास्ते पर बच्चे भागते–दौड़ते दिख रहे हैं)

महमूद – सब लोग अब साथ–साथ चलो। शहर आ गया है।

मोहसिन – यह अदालत है। यहाँ काले कपड़े पहनकर वकील मुकदमा लड़ते हैं।

नूरे – यह पुलिस–लाइन है। कांस्टेबल कंधे पर बंदूक रखे शान से खड़ा है

सम्मी – यह कॉलेज है। इसमें बड़े–बड़े लड़के पढ़ते हैं।

महमूद – (अपने साथियों से) इधर–उधर क्यों भाग रहे हो? सड़क के किनारे–किनारे चलो। इक्के तांगे आ रहे हैं। यह गाँव नहीं, शहर है।

(वे सब चुपचाप चलते हैं और थोड़ी देर बाद)

महमूद – ईदगाह आ गया है। सब लोग इमली के पेड़ के नीचे खड़े हो जाओ। नमाज़ शुरू हो गई है। शोर मत करना।

(बच्चे बहुत शांति से खड़े हो जाते हैं)

(ईदगाह के पक्के फ़र्श पर चादर बिछी हुई है। रोज़ा रखने वाले लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं। सभी लोग पश्चिम की ओर मुँह किए पंक्तियों में खड़े हैं। एक साथ झुकते हैं, एक साथ खड़े हो जाते हैं। चारो तरफ़ शांति है। काफ़ी देर के बाद नमाज़ ख़त्म होती है। सब लोग एक दूसरे के गले लगते हैं।)

महमूद – देखो, सामने खिलौनों की दुकानें हैं। चलो, खिलौने खरीदें। (बच्चे खिलौने खरीदते हैं। फिर इकट्‌ठे होते हैं।)

महमूद – मैं तो खिलौनों की दुकान से सिपाही लाया हूँ। यह घर के बाहर पहरा देगा, हम भीतर आराम से सोएँगे।

मोहसिन – मैं वकील लाया हूँ। मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी – मैं धोबिन लाया हूँ। मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोएगी। अम्मी को आराम हो जाएगा।

(पर हामिद चुप रहता है। उसके हाथ में कोई खिलौना नहीं है। सब बच्चे थोड़ा आगे चलते हैं, मिठाई की दुकान दिखती है।)

महमूद – चलो, अब कुछ खाया–पीया जाए।

सम्मी – मैं तो रेवड़ी लूँगा।

नूरे – मैं गुलाब जामुन खाऊँगा।

मोहसिन – मैं बर्फी लूँगा।

महमूद – मैं तो जलेबी खाऊँगा।

(हामिद ललचाई आँखों से उन्हें देखता है। पैसे उसकी जेब में हैं, पर वह ख़र्च करने को तैयार नहीं है। बच्चे फिर आगे बढ़ते हैं। हामिद पीछे रह जाता है। एक लोहे की दुकान पर रुक जाता है। एक चिमटा तीन पैसे में ले लेता है। उसे कुरते में छिपा लेता है।)

महमूद – हामिद, तुम क्या लाए हो? कुरते में छिपा रखा है। निकालो न!

हामिद – मुझे मिट्‌टी के खिलौने पसंद नहीं। वर्षा में भीग जाएँ तो रंग धुल जाए। जमीन पर गिर पड़े तो टूट जाएँ। मैं तो ऐसी चीज़ लाया हूँ जो बरसों बाद भी नहीं बदलेगी।

(कुरते में छिपा चिमटा निकाल कर सबको दिखाता है।)

सब बच्चे – चिमटा! चिमटा लाए हो तुम! चिमटा भी कोई खिलौना होता है?

(सब बच्चे हो–हो कर हँसते हैं)

हामिद – क्यों नहीं होता खिलौना?

(चिमटे को कंधे पर रखता है) यह देखो, यह है बंदूक।

(चिमटे को लाठी की तरह घुमाता है) यह हो गई लाठी। कौन कहता है कि यह खिलौना नहीं है। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम सबके सारे खिलौने चकनाचूर हो जाएँगे।

महमूद – (आसमान की ओर देखकर) अरे! चलो, गाँव लौट चलें। पहुँचते-पहुँचते शाम हो जाएगी।

(3)

(अमीना दरवाज़े पर खड़ी हामिद की राह देख रही है। सामने से हामिद को आते देख उसकी ओर दौड़ती है और गोद में उठाकर प्यार करने लगती है।)

अमीना – तुमने बड़ी देर लगा दी? चल हाथ मुँह धो ले, फिर सेंवइयाँ खा ले। मेले में क्या-क्या खाया?

हामिद – कुछ नहीं, मैंने वहाँ कुछ नहीं खाया, दादी! मैं तो यह लाया हूँ। (चिमटा दिखाता है।)

अमीना – (चौंककर) चिमटा! चिमटा लाया है तू? कितने पैसे में लाया?

हामिद – तीन पैसे में। कैसा बेसमझ लड़का है। दिन ढल गया, कुछ खाया न पिया। लाया क्या? चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?

हामिद – दादी! तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं न, इसलिए मैं इसे लाया हूँ।

अमीना – (आँखों में ख़ुशी के आँसू आ जाते हैं।)

इस बच्चे में कितना त्याग और कितनी समझ है। दूसरे बच्चों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देख कर इसके मन में कितना लालच उठा होगा। अपने मन पर इसने कैसे काबू पाया होगा। इस बच्चे को मेले में भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही।

(यह सब सोचते हुए अमीना आनंदित हो मुस्कराने लगती है।)

शब्दार्थ

पोता – बेटे का बेटा

ईदी – ईद के अवसर पर बड़े लोगों द्वारा छोटों को तथा नौकर एवं कमज़ोर वर्ग के लोगों को दिए जाने वाले पैसे, कपड़े तथा अन्य सामान आदि।

ईदगाह – वह स्थान जहाँ ईद के दिन मुसलमान लोग इकट्ठे होकर नमाज़ पढ़ते हैं।

कोस – एक कोस बराबर लगभग ढाई (2.5) किलोमीटर होता है।

अदालत– कचहरी, न्यायालय, 'कोर्ट'

शान से – गर्व से

इक्का – ताँगे के तरह की घोड़ा गाड़ी

ताँगा – घोड़े द्वारा खींची जाने वाली दो पहियों की गाड़ी जिस पर लोग बैठते हैं।

नमाज़ – मुसलमानों की प्रार्थना

रेवड़ी – चीनी या गुड़ से बनी चपटी या गोल मिठाई जिस पर तिल चिपके रहते हैं।

ललचाई– लालच भरी

चिमटा – Tongs

चकनाचूर– टूट कर टुकड़े–टुकड़े हो जाना

सेवइयाँ – आटे या मैदे से बनी पतली–पतली 'नूडल्स' की तरह की वस्तु

बेसमझ – बिना अक्ल का

आँखों में ख़ुशी के आँसू आना (मु.) – बहुत खुश होना

चिंता – फ़िक्र, परेशान होना

ललचाना– किसी चीज़ को पाने के लिए बहुत इच्छा करना

प्रश्न:–

1. ईद के त्यौहार पर अमीना क्यों परेशान थी?
2. हामिद अपने साथियों के साथ कहाँ जाना चाहता था?
3. ईदगाह में नमाज़ शुरू होने पर बच्चों ने क्या किया?
4. नमाज़ खत्म होने पर लोग क्या कर रहे थे?
5. हामिद ने खिलौने क्यों नहीं ख़रीदे?
6. हामिद ने कैसे बताया कि चिमटा भी एक खिलौना है?
7. हामिद ने चिमटा क्यों ख़रीदा?
8. चिमटा देखकर अमीना हामिद के बारे में क्या सोचने लगी?
9. ईद का त्यौहार कैसे मनाया जाता है।
10. पाठ में आई हुई मिठाइयों के नाम बताइए।

पाठ – 24
मेरी वसीयत

–जवाहर लाल नेहरू

मुझे मेरे देश की जनता ने, मेरे हिंदुस्तानी भाइयों और बहिनों ने इतना प्यार दिया है कि मैं किसी भी तरह उसके अंश मात्र का ऋण नहीं चुका सकता। सच तो यह है कि प्यार इतनी कीमती चीज़ है कि उसके बदले में कुछ भी देना असंभव है। इस दुनिया में बहुत से लोग हुए जिन्हें श्रेष्ठ और महान मानकर उनका आदर किया गया, पूजा गया है। लेकिन भारत के छोटे–बड़े, अमीर–ग़रीब सभी वर्गों के भाइयों और बहनों ने मुझे इतना प्यार दिया है कि उसका वर्णन मुश्किल है। मैं उनका आभार मानता हूँ। मैं कामना करता हूँ कि अपने जीवन के बाकी वर्षों में भी मैं अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँ और उनके प्रेम के योग्य बना रहूँ।

मैं मन से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई भी धार्मिक रस्म न अदा की जाए। मैं ऐसी बातों में विश्वास नहीं करता। सिर्फ रस्म समझकर इनमें बँध जाना धोखे में पड़ना है। मेरी इच्छा है कि मरने के बाद मेरा दाह संस्कार कर दिया जाए। अगर मैं विदेश में मरूँ तो मुझे वहीं जला दिया जाए और मेरी अस्थियों को इलाहाबाद भेज दिया जाए। इसमें से मुट्ठीभर राख़ गंगा में प्रवाहित कर दी जाए और उसके बड़े हिस्से को क्या किया जाए यह मैं आगे बता रहा हूँ। इसका कुछ भी भाग बचाकर न रखा जाए।

अस्थियों को गंगा में डलवाने के पीछे मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है। मुझे बचपन से गंगा और यमुना से लगाव रहा है और जैसे–जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव भी बढ़ता गया। मैंने मौसमों के बदलने के साथ–साथ इनके बदलते हुए रंग और रूप को देखा है। इनसे मुझे

उस इतिहास, उन परंपराओं, उन पौराणिक गाथाओं, उन गीतों और कहानियों की याद आती है जो कई युगों से उनके साथ जुड़कर बहते हुए पानी में घुल-मिल गई हैं।

गंगा भारत की विशेष नदी है जो जनता को अत्यंत प्रिय है। इसके साथ भारत की जातियाँ, उनकी स्मृतियाँ और आशाएँ, उनके भय, उनकी जय और पराजय जुड़ी हुई है। गंगा भारत की सभ्यता और संस्कृति की प्रतीक रही है; सदा बदलती रही, बहती रही फिर भी गंगा की गंगा रही। यह हिमालय की बर्फ़ से ढकी चोटियों और गहरी घाटियों की याद दिलाती है जिनसे मुझे मुहब्बत रही है। उनके नीचे फैले उपजाऊ मैदान हैं जहाँ मेरी ज़िंदगी गुज़री है। मैंने सर्दियों में सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है और शाम के साए में उदास, काली सी रहस्यमयी चादर ओढ़कर सिमटे हुए देखा है। बरसात में उसे दहाड़ते-गरजते हुए, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिए, सागर से टक्कर लेते हुए भी देखा है। यही गंगा मेरे लिए भारत की प्राचीनता और अतीत की निशानी है जो वर्तमान तक बहती चली आई है और भविष्य के महासागर की ओर बहती चली जा रही है।

मैंने परंपराओं, रीतियों और रिवाज़ों को छोड़ दिया है। मैं चाहता हूँ कि हिंदुस्तान भी उन सब जंजीरों को तोड़ दे जिनमें वह जकड़ा है। ये ज़ंजीरें देश की उन्नति के साथ-साथ शरीर और आत्मा के भी विकास में बाधक हैं तथा देश में फूट आदि पैदा करने वाले अनेक रोगों की जड़ हैं। किंतु इन सबके साथ-साथ मैं यह कभी नहीं चाहता कि अपने आपको अपनी परंपराओं से, अपने अतीत से अलग कर लूँ। मुझे अपनी इस शानदार विरासत और उत्तराधिकार पर गर्व है जो हमारा रहा है और आज भी है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि औरों की तरह मैं भी उस ज़ंजीर की एक कड़ी हूँ जो कभी नहीं टूटी है और जिसका सिलसिला हिंदुस्तान के इतिहास के प्रारंभ से चला आ रहा है। यह शृंखला मैं कभी नहीं तोड़ सकता। क्योंकि मैं उसकी बेहद इज़्ज़त करता हूँ और इसी से मुझे हिम्मत, प्रेरणा और हौसला मिलता है। अपनी इस इच्छा की पूर्ति तथा भारत की महान संस्कृति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए ताकि वह उस महासागर में पहुँचे जो हिंदुस्तान को घेरे हुए है।

मेरी राख के बाकी हिस्से को हवाई जहाज़ में ऊँचाई पर ले जाकर उन खेतों पर बिखेर दिया जाए जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं। ऐसा इसलिए कि वह भारत की मिट्‌टी में मिलकर उसी का अंग बन जाए।

(भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. जवाहर लाल नेहरू ने 1954 में अपनी वसीयत लिखी थी। यह पाठ उसी वसीयत का एक अंश है।)

शब्दार्थ

अंश	–	भाग
ऋण	–	कर्ज़
श्रेष्ठ	–	अच्छा, उत्तम
आभार	–	धन्यवाद
अस्थि	–	हड्‌डी
प्रवाहित करना	–	बहाना
परंपरा	–	रीतिरिवाज़
पौराणिक	–	प्राचीन
स्मृतियाँ	–	यादें
पराजय	–	हार
प्रतीक	–	चिह्न
फूट	–	वैमनस्य
विरासत	–	पूर्वजों से मिली संपदा

शृंखला	–	ज़ंजीर
हिम्मत	–	साहस
हौसला	–	बल
प्रेरणा	–	शिक्षा
पूर्ति	–	भरपाई
भस्म	–	राख़

प्रश्न:–

1. नेहरू जी ने अपनी वसीयत में क्या लिखा?
2. गंगा के विषय में नेहरू जी के क्या विचार थे?
3. नेहरू जी ने अस्थियों की राख़ कहाँ डालने के लिए कहा?
4. गंगा के विषय में अपने शब्दों में पाँच पंक्तियाँ लिखिए।
5. पं० नेहरू के विषय में अपने विचार लिखिए।

7. कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

8. पाठ के आधार पर कविता की पंक्ति पूरी कीजिये–

(1.) .... देते सभी को छाँह अपनी।

(2.) खींचते रहते निरंतर ....।

(3.) है हमें मिलती इन्हीं से ....।

(4.) .... तो मिलेगी छाँह कैसे?

(5.) और लेते साँस भी फिर ....।

(6.) .... ज़िंदगी कैसे चलेगी?

टिप्पणी

प्राणवायु – ऑक्सीजन। पेड़-पौधे ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इसे प्राणवायु कहते हैं। इसके बिना प्राणी जीवित नहीं रह सकते।

पढ़िए और समझिए

(क) गद्यान्वय–

पेड़ सह .... बाँह अपनी॥

पेड़ खुद धूप सह कर सभी को अपनी छाँह देते हैं।

सबकी मदद करने को डालियों सी अपनी बाँह बढ़ाते हैं।

(ख) व्याख्या–

जाएँ उनको .... बाँह कैसे?

कवि कहता है कि यदि हम पेड़ों को काटते ही जाएँगे तो हमें बैठने के लिए छाया कैसे मिलेगी? हमारी सहायता करने के लिए पेड़ों की बाँह जैसी डालियाँ आगे कैसे बढ़ पाएँगी। अर्थात् पेड़ों को काट देने से हमें उनसे मिलने वाले अनेक लाभ नहीं मिल सकेंगे।

प्रश्न :–

1. पेड़ हमें छाँह कैसे देते हैं?
2. कवि ने डालियों को किसके समान बताया है?
3. हमारी गंदी हवा को कौन खींचते हैं?
4. हमें पेड़ों से कैसी वायु मिलती है?
5. पेड़ बादलों को बुलाकर क्या करते हैं?
6. प्राणवायु न मिलने से क्या होगा?